इस संग्रहकी बाबत

हिन्दी काव्यकी शुरुआत लोगोको उस समयकी समस्याओंका समझाने और वीरतापूर्वक उनका सामना करनेके लिए हुई। सन्तोने कवितायें कविता लिखनेके खयालसे नहीं लिखी। अुनके सामने तो जनसमुदाय था और उसकी जरूरतोको उन्हें पूरा करना था। इससे कबीर, नानक, मीरा, तुलसी, सूर वगैराने ऐसी अमर रचनायें रची कि उनकी कवितायें आज तक लोग पढते हैं और जीवनमें उत्साह और प्रोत्साहन पाते हैं। मगर एक समयके बाद हिन्दी कविताने पलटा खाया और वह ऐसे लोगोके हाथमें पहुँच गई कि जिनका सबध आम लोगोसे न था, और वह कवियोंके आश्रयदाता राजाओ और अमीरोको खुश करनेका साधन बन गई। वह अलकार और शृंगार रससे भर गई। भाव और भाषाके खयालसे आम लोगोके जीवनसे उसका सबध न रहा।

१८ वी सदीके शुरूमें हिन्दी काव्यमे एक नयी धारा शुरू हुई। अब तक काव्यकी भाषा ब्रजभाषा थी, जो कि साहित्यिक भाषा थी। उस नयी धाराने ब्रजभाषाके बजाय लोगोकी बोलचाल और व्यवहारकी भाषा 'खडी बोली' को अपनाया, मगर उसका छन्दशास्त्र फारसीका रहा। और कवियोने मतरूकात (बहिष्कार) की नीति अख्तियार करके काव्यको ईरानकी उपमाओंमे भर दिया। इसमे वह नयी धारा भी आम लोगोसे दूर रही और फारसी पढे-लिखोकी समझकी बात रह गई।

१९ वी सदीके आखिरी हिस्सेमें इन दोनो शैलियोंके कवियोको लगा कि काव्य जनताकी समझ और शक्तिके बाहर होता जा रहा है, और इसलिए वह निर्जीव-सा बन रहा है। नयी धाराका, जो उर्दूके

नामसे मशहूर हो गई थी, 'हाली' ने भाव और भाषाके लिहाज़से जनताके साथ संबध बाँधना शुरू किया।

यह काम हिन्दी शैलीमें श्री महावीरप्रसाद द्विवेदीने शुरू किया। काव्यका क्षेत्र बढानेका काम तो भारतेन्दुजी शुरू कर चुके थे, मगर द्विवेदीजीने उसे आगे बढाया और देशप्रेम, समाजसुधार और प्राकृतिक दृश्य कविताके विषय हो गये। काव्यकी भाषा अुन्होंने ब्रजसे बदलकर 'खड़ी बोली' रखी। इसके साथ सवाल यह खडा हुआ कि किस तरहके छन्दोको अपनाया जाय। कुछ कवियोकी राय यह रही कि उर्दूकी बहरोको अपनाया जाय। मगर द्विवेदीजी और उनके साथियोकी यह राय रही कि संस्कृत छन्दोको ही लिया जाय। इस फैसलेसे वह उद्देश्य पूरा न हो सका कि जिसको ध्यानमे रखकर काव्यके क्षेत्रको बढाया गया था और अुसकी भाषा ब्रजके बजाय 'खडी बोली' रखी गई थी। संस्कृत छन्दोको लेनेसे काव्य संस्कृतमय होता चला गया और वह सर्वसाधारणके दिलको न छू सका।

श्री गुलाबराय इस संबंधमें अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्यका सुबोध इतिहास' में लिखते है· "कुछ दिनो तक आपने (श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध') 'खडी बोली' की कविता भी उर्दू बहरोकी प्रणालीमें की है। इस शैलीमें व्यापकता अवश्य आ जाती है। इसको हिन्दू-मुसलमान दोनो समझते है। किन्तु हिन्दीके व्यक्तित्वके जाते रहनेका भय रहता है। आकारका बडा प्रभाव पड़ता है। उर्दूके आकारमे हिन्दी भी उर्दू हो जाती है। इस प्रभावसे बचनेके लिए संस्कृत छदोका प्रयोग किया गया। द्विवेदीजीने इस प्रवृत्तिको अधिक प्रोत्साहन दिया। संस्कृतके वर्णवृत्तोका व्यवहार होने लगा। फलत. तुकमे स्वतंत्रता तो मिल गई, किन्तु वर्णोके नापतोलका बंधन मात्रिक छन्दोसे भी बढ गया। कविवर सुमित्रानन्दन पंतके शब्दोंमें यह कहना ठीक होगा कि वर्णवृत्त ऐसे समास, संधि और विभक्ति-प्रधान शब्दोंके लिए ही उपयुक्त है, जो कि एक दूसरेके साथ कसने

कथा मिलाकर उसे लिए हुए चलते है। इन छन्दोका फल यह होता है कि क्रिया केवल हिन्दीकी रह जाती है और लम्बे-लम्बे समासयुक्त शब्द संस्कृतके होते है।"

उधर 'हाली' और उनके साथियोकी कोशिशके होते हुए भी उर्दू काव्य कई कारणोसे अपना फारसीपन न छोड सका। इसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दीकी दोनो शैलियाँ संस्कृत और फारसी पढे-लिखे लोगोंके लिए ही रह गईं। राष्ट्रीय जाग्रति और गाधीजीके प्रयत्नोसे कुछ कवियोने जनताको खयालमे रखकर लिखना शुरू किया, मगर ये लोग समुद्रमे बूंदके समान ही रहे।

एक तीसरी धारा भी हिन्दी कविताकी थी, जिसका ज़िक्र यहाँ पर कर देना ज़रूरी है। 'हिन्दी' बहुत समय तक देशके आतर-प्रान्तीय व्यवहारकी भाषा रही, यहाँ तक कि १८ वी सदी तक गैरहिन्दी भाषा-भाषी लोगोने हिन्दीमे काव्य लिखे। इसका नमूना 'गुरु ग्रन्थसाहब' में मौजूद है। यह धारा अंग्रेज़ीके असरके कारण १९ वी सदीमें करीब करीब सूख ही गई, क्योकि हिन्दीकी राष्ट्रीय प्रतिष्ठा जाती रही थी। गाधीजीने हिन्दीकी पुरानी हैसियतको फिरसे लोगोको बताया, और हमने उसको राष्ट्रभाषाका स्थान दिया। इसके कारण पहलेकी तरहसे फिर गैरहिन्दी भाषा-भाषी लोग हिन्दीमें गद्य और पद्य लिखने लगे हैं। हिन्दीकी यह तीसरी धारा भी महत्त्वकी है। इस सग्रहमें इसको भी खयालमें रखा गया है।

आधुनिक काव्यधारा तबसे शुरू होती है कि जबसे काव्यकी भाषा ब्रजकी जगह 'खडी बोली' हुई। जैसे सदियोसे हिन्दी नागरी और उर्दू दोनो लिपियोमें लिखी जाती रही है, उसी तरहसे 'खडी बोली' का काव्य भी दोनो लिपियोमे है। वही हमारी राष्ट्रभाषाकी नीव है। इसीसे कहा जा सकता है कि उर्दू-हिन्दीका मिला-जुला आसान रूप ही राजभाषा 'हिन्दी' है। हमने इसी खयालसे इस

संग्रहमें कविताओंका चुनाव किया है। जो कवितायें उर्दू लिपिमें थीं, उन्हें नागरी लिपिमें कर दिया है।

हम कवियोंके बहुत ही आभारी हैं कि उन्होंने अपनी रचनाओंको इस संग्रहमें लेनेकी खुशीसे अपनी संमति दी। इस काव्यसंग्रहको तैयार करनेमें कई हिन्दी-प्रेमी भाई-बहनोंसे मदद मिली है। उन सबका हम आभार मानते हैं।

गूजरात विद्यापीठ,
अहमदाबाद – १४
ता० ४–४–१९५१

नानुभाई का० बारोट
गिरिराजकिशोर

अनुक्रमणिका

श्री नज़ीर अकबराबादी

इनका जन्म सन् १७४१ के आसपास दिल्लीमें हुआ। ८० वर्षकी उमर पाकर ये १८२१ में आगरेमें मर गये। इन्होंने काव्यके क्षेत्रको बहुत विशाल बनाया, मगर इनके बादके कवियोंने उसे न अपनाया। ये हिन्दू-मुस्लिम एकताके बड़े हिमायती थे। इन्होंने हिन्दू-मुस्लिम त्यौहारों, प्राकृतिक दृश्यों और दूसरी जीवन-संबंधी चीज़ों पर कवितायें लिखीं। ये अपने समयके कवियोंसे बिलकुल निराले थे। अब जैसे जैसे समय बीतता जाता है, लोग इनके काव्यको सराहते जाते हैं।

जन्म कन्हैयाजी

सब नारी आईं गोकुलकी और पास पड़ोसन आ बैठीं
कुछ ढोल मजीरे लाती थीं कुछ गीत बचाके गाती थीं

कुछ हरदम मुख उस बालकका बलिहारी होकर देख रहीं
कुछ थाल पजीरीके रखती कुछ सूँठसटोरा करती थीं

कुछ कहती थीं, "हम बैठे हैं नेग आजके दिनका लेनेको"
कुछ कहती, "हम तो आये हैं आनन्द बधावा देनेको"

कोई घुट्टी बैठी गरम करे कोई डाले अस्पन्द और भूसी
कोई लाई हँसली और खड़वे कोई कुर्ता, टोपी, मेवा, घी

कोई देखे रूप उस बालकका, कोई माथा चूमे महरभरी
कोई भवोंकी तारीफ करे कोई आँखोंकी कोई पलकोंकी

कोई कहती, "उमर वड़ी होवे ऐ बीर तिहारे वालेकी"
कोई कहती, "व्याह वहू लावो, इस आस मुरादोंवालेकी"
कोई कहती, "वालक खूब हुआ ऐ वहना तेरी नेक रती
यह वाले उनको मिलते हैं जो दुनियामें हैं वड़भागी
इस कुनवेकी भी शान वढ़ी और भाग बढ़े इस घरके भी"
यह वातें सवकी सुन सुनकर यह वात जसोदा कहती थी,
"ऐ वीर यह वालक जो ऐसा अव मेरे घरमें जन्मा है
कुछ और कहूं मैं क्या तुमसे भगवानकी मोपर किरपा है"

आदमीनामा

दुनियामें वादशाह है सो है वह भी आदमी।
और मुफलिसोगदा है सो है वह भी आदमी॥
ज़रदार वेनवा है सो है वह भी आदमी।
नेमत जो खा रहा है सो है वह भी आदमी॥
टुकड़े जो माँगता है सो है वह भी आदमी॥

मस्जिद भी आदमीने वनाई है याँ मियाँ!
वनते हैं आदमी ही इमाम और खुतवाख्वाँ॥
पढ़ते हैं आदमी ही कुरान और नमाज़ याँ।
और आदमी ही अुनकी चुराते हैं जूतियाँ॥
जो उनको ताड़ता है सो है वह भी आदमी॥

याँ आदमीपे जानको वारे है आदमी।
और आदमीपे तेगको मारे है आदमी॥
पगड़ी भी आदमीकी उतारे है आदमी।
चिल्लाके आदमीको पुकारे है आदमी॥
और सुनके दौड़ता है सो है वह भी आदमी॥

याँ आदमी नकीब हो बोले है बार-बार।
और आदमी ही प्यादे हैं और आदमी सवार॥

हुक्का, सुराही, जूतियाँ दौड़े बगलमें मार।
काँधेपे रखके पालकी हैं दौड़ते कहार॥

और उसमें जो बैठा है सो है वह भी आदमी॥

'प्रीति न कीजो कोय'

न था मालूम उल्फतमें कि गम खाना भी होता है।
जिगरकी बेकली औ दिलका घबराना भी होता है॥

सिसकना आह भरना अश्क भर लाना भी होता है।
तड़पना लोटना बेताब हो जाना भी होता है॥

कफे अफसोसको मलमलके पछताना भी होता है।
किये पर अपने फिर आप ही दुःख पाना भी होता है॥

जो मैं ऐसो जानती, प्रीति किये दुःख होय।
नगर ढँढोरा पीटती, प्रीति न कीजो कोय॥

श्री मैथिलीशरण गुप्त

इनका जन्म सन् १८८७ में चिरगाँव, जिला झाँसीमे हुआ। इनके पिता भी कवि थे। ये मरल हृदय व्यक्ति हैं। श्री महावीर-प्रमाद द्विवेदीके प्रोत्साहनसे इन्होंने कविता लिखनी शुरू की और अब खडी बोलीके बडे मशहूर कवि हो गये हैं। आधुनिक युगके हिन्दी कवियोके ये सिरमौर हैं। ये राम और राष्ट्रके परम भक्त हैं। ये अपनी रचनाओंके कारण हिन्दी साहित्यमें अमर रहेंगे।

इनकी शैलीमें प्रवाह है और वह दिल पर असर करनेवाली है। इन्होंने सिर्फ कविताका ही क्षेत्र अपनाया है, जिसके द्वारा इन्होंने देश और हिन्दीकी बडी सेवा की है। ज़मानेकी चालके साथ साथ इनकी भाषा और भाव बदलते रहे हैं। 'भारत-भारती', 'साकेत', 'यशोधरा', 'पचवटी', 'जयद्रथ-वध' आदि इनकी मशहूर रचनायें हैं।

यशोधराकी उलझन

सिद्धि-हेतु स्वामी गये, यह गौरवकी बात;
पर चोरी-चोरी गये, यही बड़ा व्याघात।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे अपनी पथ-बाधा ही पाते?
मुझको बहुत उन्होंने माना,
फिर भी क्या पूरा पहचाना?
मैंने मुख्य उसीको जाना,
जो वे मनमें लाते।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

स्वयं सुसज्जित करके क्षणमें,
प्रियतमको, प्राणोंके पणमें,
हमीं भेज देती हैं रणमें,—

क्षात्र-धर्मके नाते।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

हुआ न यह भी भाग्य अभागा,
किस पर विफल गर्व अब जागा?
जिसने अपनाया था, त्यागा;

रहे स्मरण ही आते!
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

नयन उन्हे हैं निष्ठुर कहते,
पर इनसे जो आँसू बहते,
सदय हृदय वे कैसे सहते?

गये तरस ही खाते!
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

जायँ, सिद्धि पावें वे सुखसे,
दुःखी न हों इस जनके दुखसे,
उपालंभ दूँ मैं किस मुखसे?—

आज अधिक वे भाते!
सखि, वे मुझसे कहकर जाते

गये, लौट भी वे आवेंगे,
कुछ अपूर्व-अनुपम लावेंगे,
रोते प्राण उन्हे पावेंगे,

पर क्या गाते गाते?
सखि, वे मुझसे कह कर जाते।

काबा

हुआ प्रकृतिसे जो विध्वस्त, उसे पुरुष ही करे प्रशस्त,
फिर, पहलेसे भी अभिराम, खड़ा हुआ गिर काबा धाम।
उसमें वह 'असवद' पाषाण, जिसके चुम्बनमें कल्याण,
करे कौन संस्थापित आज? लगा झगड़ने अरब समाज।
जन जन वहाँ बड़प्पन मार, जता उठा अपना अधिकार।
करे कौन अब पथ-प्रकाश? न हो यादवों-सा कुल-नाश।
"वीर बन्धुओ, न हो अधीर" सहसा शब्द हुआ गंभीर—
"रहने दो यह अशुभ विवाद" मान्य मुहम्मदका था नाद।
"प्रभु समक्ष, सोचो टुक मौन, बड़ा कौन छोटा है कौन?
तने न भौंह न खिंचे कमान, उसके जन हम सभी समान।
वीर, दिखाओ धीर विवेक, बिछा बड़ी-सी चादर एक,
रख उस पर पावन पाषाण, सभी उठाओ, पाओ त्राण।"
"साधु मुहम्मद, साधु सुयुक्ति, मिली हमें संकटसे मुक्ति।
हाथ लगावें सब अनिवार्य, करो तुम्हीं संस्थापन-कार्य।"

मौलाना अल्ताफ़हुसेन 'हाली'

इनका जन्म सन् १८४१ में पानीपतमें हुआ और सन् १९१५ में इनकी मृत्यु हुई। इनको वचपनसे ही कविता लिखनेका शौक था। इन्होंने उर्दू शायरीको पुराने ढर्रेसे निकालकर उसका क्षेत्र वढाया और जीवनके साथ उसका संबंध बाँधा। इन्होंने देशप्रेम, सामाजिक सुधार और प्राकृतिक विषय कविताके विषय वनाये। ये वडे साधु स्वभावके आदमी थे। इनकी 'मुसद्दस', 'चुपकी दाद', 'मुनाजाते वेवा' और 'कौमी नज़्में' वडी मशहूर रचनायें हैं।

मुसीवत

मुसीवतका इक-इकसे अहवाल कहना।
मुसीवतसे है यह मुसीवत जियादा॥
कहीं दोस्त तुमसे न हो जाएँ वदज़न।
जताओ न अपनी मुहव्वत जियादा॥
जो चाहो फक़ीरीमें इज़्ज़तसे रहना।
न रक्खो अमीरोंसे मिल्लत जियादा॥
फरिश्तेसे वेहतर है इन्सान वनना।
मगर इसमें पडती है मेहनत जियादा॥

हिम्मत न हारो

मगर वैठ रहनेसे चलना है वेहतर,
कि है अहले-हिम्मतका अल्लाह यावर।
जो ठण्डकमें चलना न आया मयस्सर,
तो पहुँचेंगे हम धूप खा-खाके सर पर॥

यह तकलीफ ओ राहत है सव इत्तफाकी।
चलो अव भी है वक्त चलनेका वाकी॥

वशरको है लाजिम कि हिम्मत न हारे,
जहाँ तक हो काम आप अपने सँवारे।
खुदाके सिवा छोड़ दे सब सहारे,
कि है आरजी जोर, कमजोर सारे।।

अड़े वक़्त तुम दाएँ-बाएँ न झाँको।
सदा अपनी गाड़ीको तुम आप हाँको।।

श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

इनका जन्म सन् १८६५ में निजामाबाद, जिला आजमगढमें हुआ और १९४७ मे इनका देहान्त हुआ। ये पहले सरकारी नौकर रहे और पेंशन पानेके बाद हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशीमे हिन्दीके प्रोफेसर हो गये। शुरू शुरूमे खडी बोलीमे कविता लिखनेवालोमें इनका महत्त्वका स्थान है। ये गद्य और पद्य दोनोंमें लिखते थे।

इनका खडी बोलीका महाकाव्य 'प्रिय-प्रवास' हिन्दी साहित्यमें बडा मशहूर है। इसके नायक श्रीकृष्ण पुराने कृष्ण नही है, बल्कि आजकलके महापुरुष है। ये ब्रजभाषामें भी कविता लिखते थे। इनकी पद्यकी मशहूर रचनायें 'प्रिय-प्रवास', 'चुभते चौपदे', 'चोखे चौपदे', 'वैदेही-वनवास,' 'रस-कलस' और 'पारिजात' हैं। और गद्यकी रचनाओमे 'ठेठ हिन्दीका ठाठ' और 'अधखिला फूल' हैं।

फूल और कांटा

हैं जनम लेते जगहमें एक ही,
एक ही पौधा उन्हे है पालता।
रातमें उन पर चमकता चांद भी,
एक-सी ही चांदनी है डालता।।

मेह उन पर है बरसता एक-सा,
एक-सी उन पर हवाएँ हैं वही।
पर सदा ही यह दिखाता है हमें,
ढग उनके एक-से होते नहीं॥

छेदकर काँटा किसीकी उँगलियाँ,
फाड़ देता है किसीका वर वसन।
प्यार डूबी तितलियोंके पर कतर,
भौंरका है वेध देता श्याम तन॥

फूल लेकर तितलियोको गोदमें,
भौंरको अपना अनूठा रस पिला।
निज सुगधों औ' निराले रगसे,
है सदा देता कली जीकी खिला॥

है खटकता एक सबकी आँखमें,
दूसरा है सोहता सुर-सीस पर।
किस तरह कुलकी बडाओी काम दे,
जो किसीमें हो बड़प्पनकी कसर॥

श्री माखनलाल चतुर्वेदी

ये 'एक भारतीय आत्मा' के उपनामसे मशहूर हैं। ये खण्डवाके रहनेवाले हैं और 'कर्मवीर' साप्ताहिक के ज़रिये हिन्दी साहित्यकी बहुत अच्छी सेवा कर रहे हैं। ये मशहूर राष्ट्रीय कवि हैं। इन्हें 'हिमकिरीटिनी' काव्यग्रन्थ पर देव-पुरस्कार मिला है।

इनकी शैली जोशीली है और भाषा सरल है। इन्होंने राजनीति और साहित्य दोनोंको अपने जीवनमें मिला दिया है। इनका लिखा हुआ 'कृष्णार्जुन युद्ध' नाटक कला और काव्यका एक अच्छा दर्पण है। 'कुसुम', 'कैदी और कोकिला' आदि इनके मशहूर काव्य हैं।

चाह

चाह नहीं मैं सुरबालाके गहनोंमें गूँथा जाऊँ;
चाह नहीं प्रेमी-मालामें बिंध प्यारीको ललचाऊँ।
चाह नहीं सम्राटोंके शव पर हे हरि! डाला जाऊँ;
चाह नहीं देवोंके सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ;
मुझे तोड़ लेना वनमाली! उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।

क़ैदी और कोकिला

क्या गाती हो? क्यूं रह-रह जाती हो? कोकिल! बोलो तो?
क्या लाती हो? सन्देशा किसका है? कोकिल! बोलो तो?
ऊँची काली दीवारोंके घेरेमें,
डाकू, चोरों, बटमारोंके डेरेमें,

जीनेको देते नहीं पेट-भर खाना,
मरने भी देते नहीं — तडप रह जाना!

जीवन पर अब दिन-रात कड़ा पहरा है,
शासन है, या तमका प्रभाव गहरा है?
हिमकर निराश कर गया, रात भी काली,
इस समय कालिमामयी जगी क्यूँ आली?

क्यूँ हूक पड़ी? वेदना — बोझवाली-सी — कोकिल! बोलो तो?
क्या लुटा? मृदुल वैभवकी रखवाली-सी — कोकिल! बोलो तो?

वन्दी सोते हैं, है घर्घर श्वासोंका,
दिनके दुखका रोना है निश्वासोंका,
अथवा स्वर है — लोहेके दरवाज़ोंका,
बूटोंका, या संत्रीकी आवाज़ोंका,

या गिननेवाले करते हा-हा-कार,
सारी रातों है — एक, दो, तीन, चार!
मेरे आँसूकी भरी उभय जब प्याली,
बेसुरा! — मधुर क्यों गाने आई आली?

क्या हुई बावली? अर्धरात्रिको चीखी — कोकिल! बोलो तो?
किस दावानलकी ज्वालाएँ हैं दीखीं — कोकिल! बोलो तो?

* * *

काली तू, रजनी भी काली,
शासनकी करनी भी काली,
काली लहर, कल्पना काली,
मेरी काल-कोठरी काली,
टोपी काली, कमली काली,
मेरी लोह-शृंखला काली,

पहरेकी हुंकृतिकी व्याली,
तिस पर है गाली! ऐ आली!

इस काले संकट-सागर पर मरनेकी मदमाती—
कोकिल! बोलो तो?

अपने गतिवाले गीतोंको किस विध हो तैराती—
कोकिल! बोलो तो?

तुझे मिली हरियाली डाली,
मुझे नसीब कोठरी काली,

तेरा नभ भरमें संचार,
मेरा दस फुटका संसार!

तेरे गीतों उठती वाह,
रोना भी है मुझे गुनाह!

देख विषमता तेरी मेरी,
बजा रही तिस पर रणभेरी!

इस हुंकृति पर, अपनी कृतिसे, और कहो क्या कर दूं?—
कोकिल! बोलो तो?

मोहनके व्रत पर, प्राणोंका आसव किसमें भर दूं?—
कोकिल! बोलो तो?

सैयद अकबरहुसेन 'अकबर'

इनका जन्म सन् १८४६ में इलाहाबाद ज़िलेके एक गाँवमें हुआ और सन् १९२१ में इलाहाबादमे इनकी मृत्यु हुई। ये सरकारी नौकर थे, मगर फिर भी अंग्रेजी सभ्यताके घोर विरोधी थे। इन्होंने कवितामे हास्यरस शुरू किया और इस ढगसे अंग्रेजी सभ्यताकी समालोचना की कि लोग देखकर हैरान हो गये। ये राष्ट्रीय कवि भी थे। इनका दृष्टिकोण व्यापक था। धार्मिक कट्टरता इन्हें छू तक नही गई थी।

रुबाइयाँ

छोड लिट्रेचरको अपनी हिस्ट्रीको भूल जा।
शेखो मसजिदसे ताल्लुक तर्क कर इस्कूल जा॥

चार दिनकी जिन्दगी है कोफ़्तसे क्या फायदा।
खा डवल रोटी कलरकी कर ख़ुशीसे फूल जा॥

मेरे अमलसे न शेख खुश हैं, न भाई खुश हैं, न बाप खुश हैं।
मगर मैं समझा हूँ इसको अच्छा, दलील यह है कि आप खुश हैं॥

जो देखा साइन्सका ये चक्कर, धरम पुकारा कि अय बिरादर।
हमारे दौरमें पुन मगन थे, तुम्हारे दौरमें पाप खुश हैं॥

नई तहज़ीबमें दिक्कत तो जियादा नहीं होती।
मजाहिब रहते हैं कायम फकत ईमान जाता है॥

थियेटर रातको दिनको हैं यारोंकी ये इस्पीचें।
दुहाई लाट साहबकी मेरा ईमान जाता है॥

कर दिया करजनने जन मरदोंकी सूरत देखिये।
आबरू चेहरेकी सब फ़ैशन बनाकर पूँछ ली॥

सच ये है इन्सानको यूरुपने हल्का कर दिया।
इब्तदा डाढ़ीसे की ओ इन्तहामें मूँछ ली॥

बेपर्दा नजर आईं जो कल चन्द बीबियाँ।
अकबर ज़मींमें गैरते कौमीसे गड़ गया॥

पूछा जब उनसे आपका पर्दा कहाँ गया।
कहने लगीं कि अक़्लपे मर्दोंकी पड़ गया॥

तालीम लड़कियोंकी ज़रूरी तो है मगर।
ख़ातूने ख़ाना हों वो सभाकी परी न हों॥

ज़ीइल्मो मुत्तकी हों जो हों उनके मुन्तज़िम।
उस्ताद अच्छे हो मगर उस्तादजी न हों॥

लन्दनको छोड़ लड़के *

लन्दनको छोड़ लड़के अब हिन्दकी ख़बर ले।
बनती रहेगी बातें आबाद घर तो कर ले॥

राह अपनी अब बदल दे बस 'पास' करके चल दे।
अपने वतनका रुख़ कर और रुख़सते सफर ले॥

इंग्लिशकी करके कापी दुनियाकी राह नापी।
दीनो तरीकमें भी अपने कदमको धर ले॥

वापस नहीं जो आता क्या मुन्तज़िर है इसका।
माँ ख़स्ता हाल हो ले बेचारा बाप मर ले॥

---

* महाकवि अकबरने अपने पुत्र सैयद इशरतहुसेनको पढाईके लिए विलायत भेजा था। पश्चिमकी सभ्यताका ज्यादा असर न लग जाय, इस दृष्टिसे उन्होंने अपने बेटेको लन्दनसे जल्द वापस लौटनेके लिए लिखा। यह काव्य इस बातसे ही संबंध रखता है।

मग़रिवके मुरशिदोसे तू पढ चुका वहुत कुछ।
पीराने मशरिकोसे अव फ़ंजकी नज़र ले।।

मै भी हूँ एक सख़ुनवर आ सुन कलामे 'अकवर'
इन मोतियोंसे आकर दामनको अपने भर ले।।

श्री सुमित्रानन्दन पंत

ये सन् १९०१ में गाँव कसौनी, ज़िला अल्मोडामें पैदा हुए थे। ये प्रकृतिके वडे उपासक है। इनकी प्रकृति भी एक पुष्पकी भाँति कोमल है। शुरूमें इन्होने प्रकृति पर काव्य लिखे, वादमे मानव-जीवनकी वास्तविकता पर। आजकल ये सघर्पमय जीवन पर लिख रहे है। इनकी शैली मीठी है और कोमल शव्द चुन चुनकर रखते है। ये नयी नयी उपमाओके लिए भी मशहूर है। आजकल ये छायावादके आचार्य माने जाते है। 'पल्लव', 'वीणा' और 'गुजन' इनकी लोकप्रिय रचनायें है।

'मानव-जीवन'

मै नहीं चाहता चिर सुख,
चाहता नहीं अविरत दुख।
सुख-दुखकी खेल मिचौनी,
खोले जीवन अपना मुख।।

सुख-दुखके मधुर मिलनसे,
यह जीवन हो परिपूरन।
फिर घनमें ओझल हो शशि,
फिर शशिसे ओझल हो घन।।

जग पीड़ित है अति-दुखसे,
जग पीड़ित रे अति-सुखसे।
मानव-जगमें बट जावें,
दुख सुखसे औ' सुख दुखसे॥

अविरत दुख है उत्पीड़न,
अविरत सुख भी उत्पीड़न।
दुख-सुखकी निशा-दिवामें,
सोता-जगता जग-जीवन॥

यह साँझ-उषाका आँगन,
आलिंगन विरह-मिलनका।
चिरहास-अश्रुमय आनन,
रे! इस मानव-जीवनका॥

दुख-सुख

[श्री पुष्पेन्दु]

दुख भी मानवकी सम्पति है
तू दुखसे क्यों घबराता है?

सुख आया है तो जायेगा,
दुख आया है तो जायेगा।
सुख जायेगा तो दुख देकर,
दुख जायेगा तो सुख देकर।

सुख देकर जानेवालेसे
रे मानव! क्यों भय रखता है?

सुखमें हैं व्यसन प्रमाद भरे,
दुखमें पुरुषार्थ चमकता है।
दुखकी ज्वालामें पड़कर ही
कुन्दन-सा तेज दमकता है।

दुखका अभ्यासी मानव ही
सुख पर अधिकार जमाता है।

सुख सध्याका वह लाल क्षितिज,
जिसके पश्चात् अँधेरा है;
दुख प्रातःका झुपपुटा समय,
जिसके पश्चात् सवेरा है।

सुखमें सब भूले रहते हैं
दुख सबकी याद दिलाता है।

दुखके सम्मुख जो सिहर उठे,
इतिहास न उनको जान सका।

दुखमें जो कर्मठ धीर रहे,
उनको ही जग पहचान सका।

दुख एक कसौटी है जिस पर
यह मानव परखा जाता है।

पंडित ब्रजनारायण 'चकबस्त'

इनका जन्म सन् १८८२ में फैज़ावादमें हुआ और सन् १९२६ में लखनऊमें इनकी मृत्यु हुई। ये वकालत करते थे और वडे नामी वकील थे। इन्हे कविता करनेका शुरूसे ही शौक था। इन्होने किसीको अपना उस्ताद नही वनाया। कौमी शायरीकी जड़ इन्होने वहुत मजवूत कर दी। देशकी आज़ादीके आन्दोलनमें इन्होने हिस्सा लिया। होम-रूलके ये वडे भारी हामी थे। ये देश और कौमको पश्चिमकी वुराइयोंसे वचाना चाहते थे। इनकी कवितायें देशप्रेम और समाज-सुधारकी वातोंसे भरी पडी हैं। 'सुवह वतन' इनका वडा मशहूर काव्यसग्रह है। कविताका जीवनके साथ संवंध वाँधनेवालोमे ये अगुआ थे। इनका धर्म राष्ट्रप्रेम था।

क्या हो नहीं सकता?

जिसे है फिक्र मरहमकी, उसे कातिल समझते हैं।
इलाही खैर हो, यह जख्म अच्छा हो नहीं सकता॥

कमालेबुज़दिली है पस्त होना अपनी आँखोंमें;
अगर थोड़ीसी हिम्मत हो तो फिर क्या हो नहीं सकता?

उभरने ही नहीं देती यहाँ वेमायगी दिलकी,
नहीं तो कौन कतरा है जो दरिया हो नहीं सकता?

क़ौमी मुसद्दस

गुनाह कौमके धुल जाएँ अब वोह काम करो।
मिटे कलंकका टीका वह फ़ैज़ेआम करो॥
निफ़ाको जुहलको बस दूरसे सलाम करो।
कुछ अपनी कौमके बच्चोंका अिन्तज़ाम करो॥

जो तुमने अब भी न दुनियामें काम कर जाना।
तो यह समझ लो कि बेहतर है इससे मर जाना॥

अगर जो ख़्वाबसे अब भी न तुम हुए बेदार।
तो जान लो कि इस क़ौमकी है चिता तैयार॥
मिटेगा दीन भी और आबरू भी जाएगी।
तुम्हारे नामसे दुनियाको शर्म आयेगी॥

अगर हो मर्द न यूँ उम्र रायगाँ काटो।
ग़रीब क़ौमके पैरोंकी बेड़ियाँ काटो॥

यह कारेख़ैर वोह हो नाम चारसू रह जाय।
तुम्हारी बात ज़मानेके रूबरू रह जाय॥
जो ग़ैर हैं उन्हे हँसनेकी आरज़ू रह जाय।
ग़रीब कौमकी दुनियामें आबरू रह जाय॥

महाराज वहादुर 'वर्क़'

इनका जन्म सन् १८८४ में दिल्लीमें हुआ और सन् १९३६ में ये मर गये। ये पैदाइशी और खानदानी शायर थे। इनके नाना और पिता दोनो शायर थे। ये शायरीके ही वायुमण्डलमे पाले-पोसे गये थे। ये लडकपनसे कवितायें लिखने लगे थे। जो काम हालीने शुरू किया और जिसकी जडें इकवाल और चकवस्तने मज़बूत की, उसीको वर्क साहवने और आगे वढाया। पुराने ढंगकी शायरीको छोडकर जीवनकी समस्याओंको इन्होंने कविताओंका विषय चुना। दिल्ली-निवासियोंको इन पर वडा फख्र था। इनकी कविता 'कारेखैर' वहुत मशहूर है।

कारेखैर

वता ऐ खाकके पुतले कि दुनियामें किया क्या है?
वता कै दांत हैं मुंहमें तेरे, खाया पिया क्या है?
वता खैरात क्या की, राहे मौलामें दिया क्या है?
यहांसे आकवतके वास्ते तोशाह लिया क्या है?

दुआएँ लीं कभी ठंडा किया दिल तुफ्तह जानोंका?
हुआ है तू कभी राहतरसाँ तिश्नादहानोंका?

शरीके दर्देदिल होकर किसीका दुख वटाया है?
मुसीवतमें किसी आफतज़दाके काम आया है?
पराई आगमें पड़कर कभी दिल भी जलाया है?
किसी वेकसकी खातिर जान पर सदमा उठाया है?

कभी आँसू वहाये हैं किसीकी वदनसीवी पर?
कभी दिल तेरा भर आया है मुफलिसकी ग़रीवी पर?

कभी इम्दाद दी तूने किसी वेकस विचारेको?
सखी वनकर दिया कुछ तूने मुफ़लिसके गुज़ारेको?

तसल्ली दी कभी तूने किसी आफतके मारेको?
कभी तूने सहारा भी दिया है वेसहारेको?
कभी फरियादरस वनकर खवर ली वेनवाओंकी?
लगी है चोट भी दिल पर सदा सुनकर गदाओंकी?

श्री हरिवंशराय 'वच्चन'

ये सन् १९०७ में इलाहावादमें पैदा हुए। आजकल ये अध्यापक हैं। हिन्दी काव्यक्षेत्रमें दाखिल होते ही किसी कविने शायद ही इतनी जल्दी लोकप्रियता प्राप्त की होगी। इनकी कविताओं पर उमर खैयामकी रुवाइयोंका गहरा असर है और ये हिन्दीके काव्यमें साकी, शराव और प्यालेको दाखिल करनेमें सफल रहे। इस विषयमें शुरूमें इनका वहुत विरोध हुआ, लेकिन इनकी जवानके जादूने लोगोंके दिल जीत लिये। 'मधुशाला', 'मधुवाला', मधुकलश', 'निशा-निमंत्रण', 'एकान्त संगीत', 'हलाहल' और 'सतरंगिनी' इनके प्रसिद्ध काव्य है।

कुछ कर न सका

मैं जीवनमें कुछ कर न सका!

जगमें अँधियारा छाया था,
मैं ज्वाला लेकर आया था,
मैंने जलकर दी आयु विता, पर जगतीका तम हर न सका!
मैं जीवनमें कुछ कर न सका!

वीता अवसर क्या आयेगा,
मन जीवन-भर पछतायेगा,
मरना तो होगा ही मुझको, जव मरना था तव मर न सका!
मैं जीवनमें कुछ कर न सका!

बापूके प्रति

गुण तो निःसंशय देश तुम्हारे गायेगा।
तुम-सा सदियोंके बाद कहीं फिर पायेगा।
पर तुम जिन आदर्शोंको लेकर जिये-मरे।
कितना उनको कलका भारत अपनायेगा?

वायें था सागर औ' दायें था दावानल।
तुम चले बीच दोनोंके साधक सँभल सँभल।
तुम खड्ग-धार-सा पंथ प्रेमका छोड़ गये।
लेकिन इस पर पाँवोंको कौन बढ़ायेगा?

जो पहन चुनौती पशुताको दी थी तुमने।
जो पहन दनुजतासे कुश्ती ली थी तुमने।
तुम मानवताका महा कवच तो छोड़ गये।
लेकिन उसके बोझको कौन उठायेगा?

शासन सम्राट् डरे जिसकी टंकारोंसे।
घबरायी फिरकेवारी जिसके वारोंसे।
तुम सत्य-अहिंसाका अजगव तो छोड़ गये।
लेकिन इस पर प्रत्यंचा कौन चढ़ायेगा?

श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

इनका जन्म सन् १८९९ मे ग्वालियर राज्यमे हुआ और अब ये बहुत समयसे कानपुरमे राष्ट्रीय सैनिकका जीवन बिता रहे है। राष्ट्रीय आन्दोलनके समय ये कई बार जेलयात्रा कर चुके है। साहित्यके क्षेत्रमें श्री गणेशशकर विद्यार्थीका इन पर बहुत असर पडा। इनकी कविता दो हिस्सोमें बाँटी जा सकती है। एक राष्ट्रभक्तिकी— जो शौर्य और क्रान्तिके गीतोसे भरपूर है, दूसरी प्रेम, वियोग और विरहके गीतोसे। ये अच्छे वक्ता भी है और अिनकी ज़बानमें वह जादू है कि सुननेवालोके मनको मोह लेते है। 'कुकुम', 'विस्मृता' और 'उर्मिला' इनके काव्यसग्रह है। इनमे 'कुकुम' बहुत लोकप्रिय है।

जूठे पत्ते

क्या देखा है तुमने नरको,
नरके आगे हाथ पसारे?
क्या देखे है तुमने उसकी,
आँखोमें खारे फव्वारे?
देखे है? फिर भी कहते हो,
कि तुम नहीं विप्लवकारी!

लपक चाटते जूठे पत्ते, जिस दिन मैंने देखा नरको,
उस दिन सोचा, क्यो न लगा दूं, आज आग मे दुनियाभरको?
यह भी सोचा, क्यो न टेंटुआ घोटा जाय स्वयं जगपतिका,
जिसने अपने ही स्वरूपको रूप दिया इस घृणित विकृतिका।

जगपति कहाँ? अरे सदियोसे,
वह तो हुआ राखकी ढेरी;

वरना समता संस्थापनमें,
लग जाती क्या इतनी देरी?
छोड़ आसरा अलख शक्तिका,
रे नर, स्वयं जगपति तू है;
तू गर जूठे पत्ते चाटे,
तो तुझ पर लानत है, थू है!!

कैसा बना रूप यह तेरा, घृणित, दलित, वीभत्स, भयंकर!
नहीं याद क्या तुझको, तू है चिर सुन्दर, नवीन, प्रलयंकर?
भिक्षा-पात्र फेंक हाथोंसे, तेरे स्नायु बड़े बलशाली;
अभी उठेगा प्रलय नींदसे, जरा बजा तू अपनी ताली।

ओ भिखमंगे, अरे पतित तू,
ओ मज़लूम, ओ चिरदोहित,
तू अखण्ड भण्डार शक्तिका,
जाग अरे निद्रा संमोहित;
प्राणोंको तड़पानेवाली,
हुंकारोंसे जल-थल भर दे,
अनाचारके अम्बारोंमें,
अपना ज्वलित पलीता धर दे।

भूखा देख तुझे गर उमड़ें, आँसू नयनोंमें जग-जनके,
तो तू कह दे नहीं चाहिये, हमको रोनेवाले जनके।
तेरी भूख, जिहालत तेरी, यदि न उभाड़ सके क्रोधानल,
तो फिर समझूंगा कि हो गई, सारी दुनिया कायर, निर्बल!

श्री अब्दुल मजीद भट्टी

इनका जीवन एक प्रायमरी स्कूलके शिक्षककी हैसियतसे शुरू हुआ। मगर यह काम इन्हें अपनी तवीयतके अनुकूल न मालूम हुआ। ये कातिव हो गये और जव इस काममें भी तरक्की न दिखाई दी, तो इसे भी छोड दिया और एक तालीमी रिसाला निकालने लगे। उस रिसालेके लिए इन्हें कविताओकी ज़रूरत पडी और कई कवियोकी मिन्नत समाजत करने पर भी जव इन्हे कवितायें न मिली, तो ये ३५ वर्षकी उम्रमे कवितायें लिखने लगे। इन्हें छन्दशास्त्रका विलकुल भी परिचय न था, मगर इन्होंने जीवन जिया था और उससे परिचय किया था। इन्होने ऐसी जीवन-स्पर्शी कवितायें लिखी हैं और लिखते रहते हैं कि उनसे आम लोगोको जीवनकी समस्यायें समझनेमें वडी मदद मिलती है। इनकी भाषा और भाव लोगोकी समझके अन्दर हैं। इनका एक काव्यसग्रह 'नामोनग' के नामसे छप गया है, जो वहुत मशहूर हो गया है।

अन्याय

राजकुमारी झूला झूले, दासी उसे झुलाये
मूरख जाने फल कर्मोका, मैं जानूं अन्याय
मुझसे न देखा जाय।

माँगे भीख न पाये कोई, कोई ऐश मनाये
मूरख जाने लेखकी रेखा, मैं जानूं अन्याय
मुझसे न देखा जाय।

गद्दी पर धनवान विराजे, कँगला कष्ट उठाये,
मूरख जाने अक़्लकी लीला, मैं जानूं अन्याय
मुझसे न देखा जाय।

दाता! — तू है सबका दाता
और मुनसिफ कहलाये
इस पर यह शैतानी चाला — तुझसे देखा जाय
मुझसे न देखा जाय।

त्याग

चुप चुप अपने, चुप वेगाने, नरसिंघे खामोश
अपनी रेखा लेखाकी हानि या कर्मोंका दोष
आशाओंकी फुलवारीमें फूटी कड़वी बेल
पाले पोसे विन लहराई अल्हड़ और अनेल
प्रेमलताकी सुन्दरतामें जाग उठे अरमान
अपने पराये साजन वनकर आये नजर इन्सान
कड़वी वेलमें मीठे फल आनेकी जब रुत आई
बाजे गाजे गूँज उठे और वजने लगी शहनाई
माँ मौसी और संग सखियोंने शुगन शगून मनाये
डोमनियोंने रंग रचाया छैलव सोहले गाये

शुभ दिन आया आज सखी री
शुभ दिन आया आज
चाकर वनकर आये खड़े हैं
देख सखी ऋतुराज!

मेरे लिए यह दिलकश सोहले वन गये रोना-राग
शहनाईमें डूव गया जव उसका अपना त्याग
जीवन पग पर पहले डगमें देखके अपनी ठोर
पल्लू थामकर चली बावरी हाथ पराये डोर

श्री मीर तक़ी 'मीर'

मीरसाहबका जन्म ईसवी सन् १७०९ मे आगरामें हुआ और सौ वर्षकी उमर पाकर ई० स० १८०९ मे लखनऊमे इनकी मृत्यु हुई। बचपनमे ही इनके मातापिताकी मृत्यु हो गई थी। इनकी शुरुसे ही कविता लिखनेमें रुचि थी। ये इतने मशहूर कवि हुए कि शाह-आलमके दरबार तक इनकी शोहरत पहुँच गई। और दरबारमे इनकी बडी आवभगत होने लगी। ये बडे स्वाभिमानी कवि थे। सारा जीवन गरीबीमें गुजारा, मगर कभी किसीके सामने हाथ न पसारा। इनकी कवितायें बहुत ऊँचे दरजेकी है। और इनकी कवितायें वही सबसे अच्छी हैं, जिनमें दुखदर्द टपकता है। ये काव्य लोगोंके दिल पर बडा गहरा असर करते है। इनके नौ काव्यसग्रह हैं।

उलटी हो गईं सब तदबीरें

उलटी हो गई सब तदबीरें, कुछ न दवाने काम किया।
देखा इस बीमार-ए-दिलने आखिर काम तमाम किया॥

अहदे जवानी रो रो काटा, पीरीमें लीं आँखें मूँद।
यानी रात बहुत थे जागे सुबह हुई आराम किया॥

नाहक हम मजबूरो पर यह तुहमत है मुख़्तारीकी।
चाहते हैं सो आप करे हैं हमको अबस बदनाम किया॥

किसका काबा कैसा किबला कौन हरम है क्या अहराम।
कूचेके उसके बाशिन्दोंने सबको यहींसे सलाम किया॥

यांके सपेदो-सियहमें हमको दख़ल जो है सो इतना है।
रातको रो रो सुबह किया यां दिनको जूं तूं शाम किया॥

'मीर' के दीनो-मज़हबको अब पूछते क्या हो उनने तो।
क़शक़ा खींचा दैरमें बैठा कबका तर्क इस्लाम किया।।

क्या कर चले!

फ़क़ीराना आये सदा कर चले।
मियाँ ख़ुश रहो हम दुआ कर चले।।

वो क्या चीज़ है आह! जिसके लिए।
हरयक चीज़से दिल उठाकर चले।।

कोई नाउम्मेदाना करके निगाह।
सो तुम हमसे मुँह भी छिपाकर चले।।

दिखायी दिये यूँ कि बेख़ुद किया।
हमें आपसे भी जुदा कर चले।।

जबीं सिजदे करते ही करते गयी।
हक़े बन्दगी हम अदा कर चले।।

परस्तिश की याँ तक कि ऐ बुत! तुझे।
नज़रमें सभोंकी ख़ुदा कर चले।।

गयी उम्र दर फ़िक्रे बन्दे ग़ज़ल।
सो इस फ़नको ऐसा बड़ा कर चले।।

कहें क्या जो पूछे कोई हमसे 'मीर'।
जहाँमें तुम आये थे क्या कर चले।।

श्रीमती महादेवी वर्मा

इनका जन्म सन् १९०७ मे फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) के एक अच्छे खानदानमें हुआ। आजकल ये महिला विद्यापीठ, प्रयागकी प्रिंसिपल हैं। इन्होंने हिन्दीके आधुनिक साहित्यको मीराकी तरह विरहके गीतोंसे भर दिया है। इनकी कवितामें विषाद और करुणा है और ये रहस्यवादकी ओर झुकी हुई हैं। इनको 'नीरजा' गीत-संग्रह पर सेक्सरिया पुरस्कार मिला है। ये एक अच्छी गद्यलेखिका भी हैं। 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सान्ध्यगीत', 'यामा' और 'दीपशिखा' इनकी लोकप्रिय रचनायें हैं।

कौन पहुँचा देगा उस पार?

घोर तम छाया चारों ओर,
घटायें घिर आई घनघोर;

वेग मारुतका है प्रतिकूल,
हिले जाते हैं पर्वतमूल,

गरजता सागर बारम्बार,
कौन पहुँचा देगा उस पार?

तरगें उठीं पर्वताकार
भयंकर करतीं हाहाकार;

अरे उनके फेनिल उच्छ्वास
तरीका करते हैं उपहास;

हाथसे गई छूट पतवार,
कौन पहुँचा देगा उस पार?

जो लहरोंसे खेल गया।
लहरोंने आप उभारा॥ मांझी!

बढ़ते चलो

[श्री क़तील शफाई]

मंज़िलको पहचान
मुसाफ़िर
मंज़िलको पहचान

कितनी आड़ी तिरछी राहें
देखेंगी मायूस निगाहें
लाना मत होठों पर आहे

यह नहीं तेरी शान
मुसाफिर
मंज़िलको पहचान

फांदके परवत बढ़ते जाना
दरियाओंको बूंद बनाना
सहराओंकी खाक उड़ाना

बन जाना तूफान
मुसाफिर
मंज़िलको पहचान

बिजली कड़के आंधी आये
सारी दुनिया पलटा खाये
धरती पानीमें बह जाये

हार न फिर भी मान
मुसाफिर
मंज़िलको पहचान

श्री सियारामशरण गुप्त

इनका जन्म ई० स० १८९५ में हुआ। ये भी अपने वडे भाई श्री मैथिलीशरण गुप्तके साथ चिरगाँव (झाँसी) में रहते है। इन्होंने भी अपनी कुल परपरा और गौरवको बनाये रखा है। कविताके अलावा इन्होंने कहानी, नाटक, उपन्यास और निबध भी लिखे है। इनकी तबीयत ठीक नही रहती, मगर फिर भी ये लिखते ही रहते हैं।

इनकी शैली भावपूर्ण है, और शब्दोका प्रयोग वडे अच्छे ढगसे करते है। इनका 'नारी' उपन्यास वडा प्रसिद्ध है। 'आत्मोत्सर्ग', 'विषाद', 'मौर्यविजय', 'अनाथ', 'दूर्वादल', 'मृण्मयी', 'पाथेय', 'आर्द्रा', 'बापू' और 'उन्मुक्त' इनके मशहूर काव्यसग्रह हैं।

विदाके समय

जाता हूँ जाने दो मुझको,
हूँ मैं सरित्-प्रवाह,
जाकर फिर फिर आ जानेकी
मेरे मनमें चाह।

बन्धु, बाँध रखो मत मुझको,
मैं मलयानिल मुक्त;
जाकर ही फिर लौट सकूँगा,
नव नूतन मधु युक्त।

गृह कपोत हूँ मैं, उड़ने दो
मुझको पंख पसार;
नहीं हर सकेगा अनन्त भी
मेरे घरका प्यार।

चिन्ताकी क्या बात, सखे यही
हूँ मैं पूरा वर्ष,
लौट पड़ूँगा क्षणमें ही मैं
ले नूतनका हर्ष।

एक फूलकी चाह

१

उद्वेलित कर अश्रु-राशियाँ, हृदय-चिताएँ धधकाकर,
महा महामारी प्रचण्ड हो फैल रही थी इधर उधर।
क्षीण-कंठ मृतवत्साओंका करुण-रुदन दुर्दान्त नितान्त,
भरे हुअे था निज कृश रवमें हाहाकार अपार अशांत।
बहुत रोकता था सुखियाको, 'न जा खेलनेको बाहर',
नहीं खेलना रुकता उसका, नहीं ठहरती वह पल भर।
मेरा हृदय काँप उठता था बाहर गई निहार उसे;
यही मानता था कि बचा लूँ किसी भाँति इस बार उसे।
भीतर जो डर रहा छिपाये, हाय! वही बाहर आया,
एक दिवस सुखियाके तनुको ताप-तप्त मैंने पाया।
ज्वरमें विह्वल हो बोली वह, क्या जानूँ किस डरसे डर—
मुझको देवीके प्रसादका एक फूल ही दो लाकर!

२

बेटी, बतला तो मुझको किसने तुझे बताया यह;
किसके द्वारा, कैसे तूने भाव अचानक पाया यह?
मैं अछूत हूँ, मुझे कौन हा! मंदिरमें जाने देगा?
देवीका प्रसाद ही मुझको कौन यहाँ लाने देगा?
बार बार, फिर फिर, तेरा हठ! पूरा इसे करूँ कैसे;
किससे कहूँ, कौन बतलावे, धीरज हाय! धरूँ कैसे?

कोमल कुसुम-समान देह हा! हुई तप्त अगार-मयी;
प्रतिपल बढ़ती ही जाती है विपुल वेदना व्यथा नई।

मैंने कई फूल ला लाकर रक्खे उसकी खटिया पर,
सोचा—शांत करूँ मैं उसको, किसी तरह तो बहलाकर।

तोड़-मोड़ वे फूल फेंक सब बोल उठी वह चिल्लाकर—
मुझको देवीके प्रसादका एक फूल ही दो लाकर!

* * *

३

"कुछ हो देवीके प्रसादका एक फूल तो लाऊँगा,
हो तो प्रातःकाल, शीघ्र ही मंदिरको मैं जाऊँगा।

तुझ पर देवीकी छाया है, और इष्ट है यही मुझे;
देखूँ देवीके मंदिरमें रोक सकेगा कौन मुझे।"

मेरे इस निश्चल निश्चयने झट-से हृदय किया हलका;
ऊपर देखा अरुण रागसे रंजित भाल नभ-स्थलका!

झड-सी गई तारकावलि थी म्लान और निष्प्रभ होकर;
निकल पड़े थे खग नीड़ोंमे मानो सुध-बुध-सी खोकर

रस्सी डोल हाथमें लेकर निकट कुएँ पर जा जल खींच,
मैंने स्नान किया शीतल हो, सलिल-सुधासे तनुको सींच।

उज्ज्वल वस्त्र पहन घर आकर अशुचि-ग्लानि सब धो डाली,
चंदन-पुष्प-कपूर-धूपसे सज ली पूजाकी थाली।

सुखियाके सिरहाने जाकर मैं धीरेसे खड़ा हुआ;
आँखें झँपी हुई थीं, मुख भी मुरझा-सा था पड़ा हुआ।

मैंने चाहा, उसे चूम लूँ किन्तु अशुचितासे डरकर,
अपने वस्त्र सँभाल, सिकुडकर खड़ा रहा कुछ दूरी पर।

वह कुछ-कुछ मुसकाई सहसा जाने किन स्वप्नोंमें लग्न,
उसकी वह मुस्काहट भी हा ! कर न सकी मुझको मुद-मग्न।
अक्षम मुझे समझकर क्या तू हँसी कर रही है मेरी?
बेटी, जाता हूँ मंदिरमें आज्ञा यही समझ तेरी।
उसने नहीं कहा कुछ, मैं ही बोल उठा तब धीरज धर—
तुझको देवीके प्रसादका एक फूल तो दूँ लाकर।

*　　　　*　　　　*

४

सिंहपौरसे भी आँगन तक नहीं पहुँचने मैं पाया,
सहसा यह सुन पड़ा कि —"कैसे यह अछूत भीतर आया?
पकड़ो, देखो भाग न जावे, बना धूर्त यह है कैसा;
साफ-स्वच्छ परिधान किये है भले मानुषोंके जैसा!
पापीने मंदिरमें घुसकर किया अनर्थ बड़ा भारी;
कलुषित कर दी है मंदिरकी चिरकालिक शुचिता सारी।"
ऐं, क्या मेरा कलुष बड़ा है देवीकी गरिमासे भी;
किसी बातमें मैं हूँ आगे माताकी महिमाके भी?
माँके भक्त हुए तुम कैसे करके यह विचार खोटा?
माँके संमुख ही माँका तुम गौरव करते हो छोटा!
कुछ न सुना भक्तोंने, झटसे मुझे घेर कर पकड़ लिया;
मार-मारकर मुक्के घूँसे धम-से नीचे गिरा दिया!
मेरे हाथोंसे प्रसाद भी बिखर गया हा! सबका सब,
हाय! अभागी बेटी तुझ तक कैसे पहुँच सके यह अब?
मैंने उनसे कहा, "दण्ड दो मुझे मारकर, ठुकराकर,
बस यह एक फूल कोई भी दो बच्चीको ले जाकर।"

शेख़ मुहम्मद इब्राहीम 'ज़ौक़'

इनका जन्म सन् १७८९ में दिल्लीमे हुआ। ६५ वर्षकी उमर पाकर सन् १८५४ मे इनकी मृत्यु हुई। इनका जन्म मामूली घरानेमे हुआ था, मगर इन्हें काव्यका शौक वचपनसे ही था। इसलिए ये वडे मशहूर कवि हो गये और वादशाहके उस्ताद वन गये। इसमे इनकी इज्ज़त तो ख़ूब हुई, मगर काव्यशक्तिको धक्का पहुँचा। वादशाह दिनमे इन्हें कई वार वुलाते थे और तरह तरहकी वातो पर कविता लिखनेको कहते थे। इसका नतीजा यह हुआ कि जौकको कभी ऐसा समय न मिला कि अपनी मरजीके अनुसार कवितायें लिख पाते।

रुबाइयाँ

लाई हयात आये कज़ा ले चली चले।
अपनी ख़ुशी न आये न अपनी ख़ुशी चले॥

वेहतर तो है यही कि न दुनियासे दिल लगे।
पर क्या करें जो काम न वे-दिल्लगी चले॥

हो उम्र खिज़्र भी तो कहेंगे व-वक़्ते मर्ग।
हम क्या रहे यहाँ अभी आये अभी चले॥

दुनियाने किसका राहे फनामें दिया है साथ।
तुम भी चले चलो युं ही जव तक चली चले॥

जाते हवाये शौकमें हैं इस चमनसे ज़ौक।
अपनी वलासे वादे सवा अव कभी चले।

गर मारा तो क्या मारा?

किसी वेकसको ऐ वेदादगर मारा तो क्या मारा।
जो आपी मर रहा हो उसको गर मारा तो क्या मारा॥

न मारा आपको जो ख़ाक हो अकसीर बन जाता।
अगर पारेको ऐ अकसीरगर मारा तो क्या मारा ॥

बड़े मूज़ीको मारा नफ़्सेअम्माराको गर मारा।
निहंगो अजदहाओ शेरनर मारा तो क्या मारा ॥

नहीं वह कौलका सच्चा हमेशा कौल दे देकर।
जो उसने हाथ मेरे हाथ पर मारा तो क्या मारा ॥

तुफ़गो तीर तो ज़ाहिर न था कुछ पास क़ातिलके।
इलाही फिर जो दिल पर ताकके मारा तो क्या मारा ॥

रिन्दे ख़राब हाल

रिन्दे ख़राब हालको ज़ाहिद ! न छेड़ तू।
तुझको पराई क्या पड़ी, अपनी नबेड तू ॥

नाख़ुन ख़ुदा न दे तुझे ऐ पंजये जनूँ।
देगा तमाम अक़्लके बख़िये उधेड़ तू ॥

जो सोती भीड़ अपने सरो शोरसे जगाये।
दरवाज़ा घरका उस सगे दुनिया पे भेड़ तू ॥

मिर्ज़ा असदुल्लाखाँ 'ग़ालिब'

इनका जन्म ई० स० १७९७ में हुआ और ७२ वर्षकी उमर पाकर ये सन् १८६९ में दिल्लीमें मर गये। इनको कवितायें लिखनेका बचपनसे ही शौक था। ये बडे स्वाभिमानी और सरल हृदयवाले थे। इनका काव्य अमर काव्य है। अपने समकालीन कवियोंके रास्तेसे निकलकर इन्होने काव्यका संबंध जीवनके साथ जोडा। ये बिलकुल खुशामदपसन्द न थे। अमीर घरानेमें पैदा हुए थे, मगर अपने स्वभाव और स्वाभिमानके कारण सारी उमर गरीबीमें गुज़ारी। ये शराब पीते थे, मगर तत्त्वज्ञानी कवि थे। इस संबंधमें इनका अपना शेर बडे महत्त्वका है। और वह यह है:—

यह मसाइलेतसव्वुफ यह तेरा बयान 'ग़ालिब'।
तुझे हम वली समझते, जो न बादाख्वार होता।

इनमें मज़हबी कट्टरपन बिलकुल न था और ये हिन्दू-मुस्लिम ऐक्यके बडे हामी थे। ये ज़ौकके समकालीन थे।

कोई उम्मीद बर नहीं आती

कोई उम्मीद बर नहीं आती।
कोई सूरत नजर नहीं आती॥

मौतका एक दिन मुऐयन है।
नींद क्यों रातभर नहीं आती॥

आगे आती थी हाले दिलपे हँसी।
अब किसी बात पर नहीं आती॥

है कुछ ऐसी ही बात जो चुप हूँ।
वरना क्या बात कर नहीं आती॥

हम वहाँ हैं जहाँसे हमको भी।
कुछ हमारी खबर नहीं आती॥
मरते हैं आरजूमें मरनेकी।
मौत आती है पर नहीं आती॥

जहाँ कोई न हो

रहिये अब ऐसी जगह चलकर जहाँ कोई न हो।
हमसखुन कोई न हो, और हमजबाँ कोई न हो॥
बेदरोदीवार-सा इक घर बनाना चाहिये।
कोई हमसाया न हो और पासबाँ कोई न हो॥
पड़िये गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार।
और अगर मर जाइये नौहाख्वाँ कोई न हो॥

क्या होता ?

न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता।
डुबोया मुझको होनेने, न होता मैं तो क्या होता॥
हुआ जब ग़मसे यों बेहिस तो ग़म क्या सरके कटनेका।
न होता गर जुदा तनसे ज़ानू पर धरा होता॥
हुई मुद्दत कि गालिब मर गया, पर याद आता है।
वो हरइक बात पर कहना कि यों होता तो क्या होता॥

विसाले यार

यह न थी हमारी किस्मत कि विसाले यार होता।
अगर और जीते रहते यही इन्तजार होता॥
तेरे वादे पर जिये हम तो यह जान झूट जाना।
कि खुशीसे मर न जाते अगर एतबार होता॥
कोई मेरे दिलसे पूछे तेरे तीर नीमकशको।
यह खलिश कहाँसे होती जो जिगरके पार होता॥

यह कहाँ कि दोस्ती है कि बने हैं दोस्त नासेह।
कोई चारहसाज होता कोई गम गुसार होता॥

कहूँ किससे मैं कि क्या है? शबेगम बुरी बला है।
मुझे क्या बुरा था मरना अगर एक बार होता॥

हुये मरके हम जो रुसवा हुये क्यो न ग़र्क़े दरियां।
न कभी जनाजा उठता न कहीं मजार होता॥

उसे कौन देख सकता कि यगाना है वह यकता।
जो दुईकी बू भी होती तो कहीं दो चार होता॥

श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान

ये सन् १९०५ मे प्रयागमें पैदा हुई थी। ये मध्यप्रान्तकी धारा-सभाकी मेम्बर थी। श्रीमती महादेवी वर्माके बाद हिन्दी कवयित्रियोमें इनका ही नाम मशहूर है। हालमें ही इनकी मृत्यु हुई है। 'मुकुल' काव्यसग्रह और कहानी-सग्रह 'बिखरे मोती' पर इनको सेक्सरिया पुरस्कार मिला था। इनकी कविताओमें राष्ट्रीयता, वीररस, प्रेम और घरेलू जीवनके सुन्दर चित्र है। 'झाँसीकी रानी' और 'झाँसी-रानीकी समाधि पर' इनकी बडी मशहूर कवितायें है।

मेरा जीवन

मैंने हँसना सीखा है
मैं नहीं जानती रोना।

बरसा करता पल-पल पर
मेरे जीवनमें सोना।

मैं अब तक जान न पाई
कैसी होती है पीड़ा?

हँस-हँस जीवनमें कैसे
करती है चिन्ता क्रीड़ा ?
जग है असार सुनती हूँ
मुझको सुख-सार दिखाता।
मेरी आँखोंके आगे
सुखका सागर लहराता।
कहते हैं होती जाती
खाली जीवनकी प्याली।
पर मैं उसमें पाती हूँ
प्रतिपल मदिरा मतवाली।
उत्साह उमंग निरंतर
रहते मेरे जीवनमें।
उल्लास विजयका हँसता
मेरे मतवाले मनमें।
आशा आलोकित करती
मेरे जीवनके प्रतिक्षण।
हैं स्वर्ण-सूत्रसे वलयित
मेरी असफलताके घन।
सुखभरे सुनहले बादल
रहते हैं मुझको घेरे।
विश्वास, प्रेम, साहस हैं
जीवनके साथी मेरे।

झाँसी-रानीकी समाधि पर

इस समाधिमें छिपी हुई है
एक राखकी ढेरी।
जलकर जिसने स्वतंत्रताकी
दिव्य आरती फेरी।।

यह समाधि, यह लघु समाधि है
झाँसीकी रानीकी।
अन्तिम लीला-स्थली यही है
लक्ष्मी मरदानीकी॥

यहीं कहीं पर बिखर गई वह
भग्न हृदय-माला-सी।
उसके फूल यहाँ संचित हैं
है यह स्मृति-शाला-सी॥

सहे वार-पर-वार अन्त तक
लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी गिर, चढी चिता पर
चमक उठी ज्वाला-सी॥

बढ जाता है मान वीरका
रणमें बलि होनेसे।
मूल्यवती होती सोनेकी
भस्म यथा सोनेसे॥

रानीसे भी अधिक हमें अब
यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतन्त्रताकी
आशाकी चिनगारी॥

इससे भी सुन्दर समाधियाँ
हम जगमें हैं पाते।
उनकी गाथा पर निशीथमें
क्षुद्र जन्तु ही गाते॥

पर कवियोंकी अमर गिरामें
इसकी अमिट कहानी।

स्नेह और श्रद्धासे गाती
है वीरोकी वानी ॥

यह समाधि, यह चिर-समाधि है
झाँसीकी रानीकी।
अन्तिम लीला-स्थली यही है।
लक्ष्मी मरदानीकी ॥

श्री रामधारीसिंह 'दिनकर'

ये १९०८ ईसवीमें मुंगेरमें पैदा हुए थे। इनको भारतके प्राचीन इतिहास पर बड़ा नाज़ है। आजकल हिन्दी कवियोंमे भारतका गौरव गानेमें ये सबसे आगे हैं। ये आजकलकी स्थितिको पलटना चाहते हैं। और इनके काव्य इसी तरहके विचारोंसे भरपूर हैं। इनकी भाषा और शैली सरल है, मगर जोशीली और शक्तिशाली है। 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवती', 'नई दिल्ली' और 'विपथगा' इनके मशहूर काव्यसंग्रह हैं।

हिमालयके प्रति

मेरे नगपति! मेरे विशाल!
साकार, दिव्य, गौरव विराट,
पौरुषके पुंजीभूत ज्वाल,
मेरी जननीके हिम-किरीट,
मेरे भारतके दिव्य भाल!
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

युग-युग अजेय, निर्बन्ध, मुक्त
युग-युग गर्वोन्नत, नित महान,
निस्सीम व्योममें तान रहे
युगसे किस महिमाका वितान?

कैसी अखण्ड यह चिर-समाधि ?
यतिवर ! कैसा यह अमर ध्यान ?
तू महाशून्यमें खोज रहा
किस जटिल समस्याका निदान ?

उलझनका कैसा विषम जाल ?
मेरे नगपति ! मेरे विशाल !

ओ, मौन तपस्या-लीन-यति,
पल-भर तो कर नयनोन्मेष;
रे, ज्वालाओं से दग्ध विकल
है तड़प रहा पद पर स्वदेश !

सुख-सिन्धु, पंचनद, ब्रह्मपुत्र,
गंगा, यमुनाकी अमिय-धार,
जिस पुण्य-भूमिकी ओर बही
तेरी विगलित करुणा उदार,

जिसके द्वारों पर खड़े क्रांत
सीमापति ! तूने की पुकार —
'पद-दलित इसे करना पीछे,
पहले ले मेरा सिर उतार ! '

उस पुण्य-भूमि पर आज तपी,
रे ! आन पड़ा संकट कराल;
व्याकुल तेरे सुत तड़प रहे !
डँस रहे चतुर्दिक विविध व्याल !

मेरे नगपति ! मेरे विशाल !

कितनी मणियाँ लुट गयीं, मिटा
कितना मेरा वैभव अशेष?
तू ध्यान-मग्न ही रहा, इधर
वीरान हुआ सारा स्वदेश!

कितनी द्रुपदाके बाल खुले,
कितनी कलियोंका अन्त हुआ,
कह हृदय खोल चित्तोर! यहाँ
कितने दिन ज्वाल-वसन्त हुआ!

तू पूछ अवधसे, राम कहाँ?
वृंदा! बोलो, घनश्याम कहाँ?
ओ मगध! कहाँ मेरे अशोक?
वह चंद्रगुप्त बल-धाम कहाँ?

री कपिलवस्तु! कह, बुद्धदेव
के वे मंगल-उपदेश कहाँ?
तिब्बत, ईरान, जापान, चीन
तक गये हुए सन्देश कहाँ?

ले अँगड़ाई उठ, हिले धरा,
कर निज विराट स्वरमें निनाद,
तू शैलराट्! हुंकार भरे;
फट जाये कुहा, भागे प्रमाद।

तू मौन त्याग, कर सिंहनाद
रे तपी! आज तपका न काल।

नवयुग-शंखध्वनि जगा रही—
तू जाग, जाग, मेरे विशाल!

मेरे नगपति! मेरे विशाल!

शेख़ मुहम्मद 'इक़बाल'

इनका जन्म सन् १८७५ में स्यालकोटमें हुआ और सन् १९३७ में लाहौरमे इनकी मृत्यु हुई। ये वडे ऊँचे दरजेके शायर थे। इनका नाम साहित्यिक जगतमे सारी दुनियामें मशहूर है। इन्होने फारसी और उर्दू दोनोमे कवितायें लिखी। इनकी कविताओमें जीवनका फिलसफा है। इन्हें अपने देश पर अभिमान था, और इस अभिमानको 'सारे जहाँसे अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' काव्य लिखकर इन्होने व्यक्त किया। यूरोपियन सभ्यताकी जडोको ये मज़बूत नही मानते थे। इस सबधमे इन्होने लिखा है:

तुम्हारी तहज़ीब अपने खंजरसे आप ही खुदकुशी करेगी।
जो शाखे नाज़ुक पे आशियाना होगा नापायदार होगा॥

इनकी कविताओका असर दिल पर बडा गहरा होता है। शायरीमें जो काम हालीने शुरू किया, उसको पूरा करनेवालोमें से एक ये हैं।

क़ौमी गीत

चिश्तीने जिस ज़मींमें पैग़ामे हक सुनाया
नानकने जिस चमनमें वहदतका गीत गाया
तातारियोने जिसको अपना वतन बनाया
जिसने हिजाज़ियोंसे दश्ते अरब छुड़ाया
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।

यूनानियोंको जिसने हैरान कर दिया था
सारे जहाँको जिसने इल्मो हुनर दिया था
मिट्टीको जिसकी हकने ज़रका असर दिया था
तुर्कोंका जिसने दामन हीरोसे भर दिया था
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।

टूटे थे जो सितारे फ़ारिसके आसमाँसे
फिर ताव देके जिसने चमकाये कहकशाँसे
वहदतकी लै सुनी थी दुनियाने जिस मकाँसे
मीरे अरबको आई ठण्डी हवा जहाँसे
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।

वन्दे कलीम जिसके, परवत जहाँके सीना
नूहे नबीका आकर ठैरा जहाँ सफीना
रफअत है जिस ज़मींकी बामे फ़लकका जीना
जन्नतकी ज़िन्दगी है जिसकी फ़ज़ामें जीना
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।

उकता गया हूँ

दुनियाकी महफिलोंसे उकता गया हूँ या रब
क्या लुत्फ़ अंजुमनका जब दिल ही बुझ गया हो
शोरिशसे हूँ गुरेजाँ दिल ढूँढ़ता है मेरा
अैसा सकूत जिस पर तकरीर भी फिदा हो
मरता हूँ ख़ामुशी पर यह आरज़ू है मेरी
दामाने कोहमें इक छोटासा झोंपड़ा हो
लज्ज़त सरोदकी हो चिड़ियोंके चहचहेमें
चश्मेकी शोरिशोंमें बाजासा बज रहा हो
आग़ोशमें ज़मींके सोया हुआ हो सब्ज़ा
फिर फिरके झाड़ियोंमें पानी चमक रहा हो
गुलकी कली चटककर पैग़ाम दे किसीका
साग़र ज़रासा गोया मुझको जहाँनुमा हो
सफ बाँधे दोनों जानिब बूटे हरेभरे हों
नद्दीका साफ़ पानी तस्वीर ले रहा हो

हो दिलफरेब ऐसा कुहसारका नजारा
पानी भी मौज बनकर उठ उठके देखता हो

रातोंके चलनेवाले रह जायें थकके जिस दम
उम्मीद उनकी मेरा टूटा हुआ दिया हो

पिछले पहरकी कोयल वह सुबहकी मुअज्जन
मैं उसका हमनवा हूँ वह मेरी हमनवा हो

कानों पे हो न मेरे दैरोहरमका एहसाँ
रोजन ही झोंपडीका मुझको सहरनुमा हो

फूलोको आये जिस दम शबनम वजू कराने
रोना मेरा वजू हो नाला मेरी दुवा हो

दिल खोलकर बहाऊँ अपने वतन पर आँसू
सरसब्ज जिनकी नमसे बूटा उम्मीदका हो

इस खामुशीमें जायें इतने बुलन्द नाले
तारोके काफिलेको मेरी सदा दिरा हो

हर दर्दमन्द दिलको रोना मेरा रुला दे
बेहोश जो पडे हैं शायद उन्हे जगा दे

श्री जयशंकर प्रसाद

इनका जन्म १८८९ ईसवीमे हुआ और सन् १९३७ में स्वर्गवास हुआ। ये काशीके रहनेवाले थे। इन्होने साहित्यके हरएक क्षेत्रमें अपनी कलम चलायी। ये संस्कृत और बौद्ध साहित्यके गहरे अभ्यासी और विद्वान थे। इसलिए इनकी कविताओमे बौद्ध तत्त्वज्ञानकी साफ झलक दिखाई देती है। इन्होने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक— सभी क्षेत्रमे सुन्दर कृतियाँ रची हैं। इन्हें 'कामायनी' काव्यसंग्रह पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिला। इन्होने अपनी कविताओमें प्रेम और वेदनाका अच्छा चित्र खीचा है। इनकी भाषा सस्कृतमय है। आधुनिक काव्यमे ये छायावादके सर्जक हैं। 'आँसू', 'लहर', 'कानन-कुसुम', 'झरना', 'प्रेम-पथिक' और 'करुणालय' इनके मशहूर काव्यसंग्रह हैं।

कविके अलावा ये एक मशहूर नाटककार भी हैं। 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त', 'अजातशत्रु' और 'विशाखा' इनके मशहूर नाटक हैं। 'तितली' और 'कंकाल' इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

नारी

"यह आज समझ तो पायी हूँ
मैं दुर्बलतामें नारी हूँ;
अवयवकी सुन्दर कोमलता
लेकर मैं सबसे हारी हूँ।
सर्वस्व समर्पण करनेकी
विश्वास महा तरु-छायामें;
चुपचाप पड़ी रहनेकी क्यों
ममता जगती है मायामें?

निस्संवल होकर तिरती हूँ
इस मानसकी गहराईमें;
चाहती नहीं जागरण कभी
सपनेकी इस सुघराईमें।

नारी-जीवनका चित्र यही
क्या? विकल रंग भर देती हो;
अस्फुट रेखाकी सीमामें
आकार कलाको देती हो।

मैं जभी तौलनेको करती
उपचार, स्वयं तुल जाती हूँ।
भुज-लता फँसाकर नर-तरुसे
झूले-सी झोंके खाती हूँ।"

"नारी! तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास-रजत-नग-पग-तलमें;
पीयूष-स्रोत-सी बहा करो
जीवनके सुन्दर समतलमें;

देवोंकी विजय, दानवोंकी
हारोंका होता युद्ध रहा;
संघर्ष सदा उर अन्तरमें
जीवित रह नित्य विरुद्ध रहा।

आँसूसे भींगे अंचल पर
मनका सब कुछ रखना होगा;
तुमको अपनी स्मित-रेखासे
यह संधि-पत्र लिखना होगा।"

श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

ये बंगालमे पैदा हुए और आजकल लखनऊमें रहते हैं। ये संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी, और हिन्दीके अच्छे विद्वान हैं। इन्होंने अपनी कविताओंमें नये ढंगके छन्दोंका प्रयोग किया है, जो 'मुक्तछन्द' के नामसे मशहूर है। ये काव्यके नियमोंमे बन्द रहना पसन्द नहीं करते और ताल और लयके वेगमें शब्दोंको तोडने-मरोडने तकसे नहीं रुके। इनकी भाषा संस्कृतप्रचुर है और कहीं-कहीं जटिल हो गई है। इन्होंने साहित्यके हरएक क्षेत्रमे अपनी कलम चलाई है। ये उपन्यासलेखक भी हैं। 'तुलसीदास', 'अनामिका' और 'परिमल' इनके मशहूर काव्यसंग्रह हैं। 'अप्सरा', 'अलका' और 'कुल्लीभाट' वगैरा इनके बहुत लोकप्रिय उपन्यास हैं।

विधवा

वह इष्टदेवके मंदिरकी पूजा-सी
वह दीपशिखा-सी शान्त, भावमें लीन,
वह क्रूर काल-तांडवकी स्मृति-रेखा-सी,
वह टूटे तरुकी छुटी लता-सी दीन —
दलित भारतकी ही विधवा है।
षड्-ऋतुओंका शृंगार,
कुसुमित काननमें नीरव-पद-संचार,
अमर कल्पनामें स्वच्छन्द विहार —
व्यथाकी भूली हुई कथा है,
उसका एक स्वप्न अथवा है।
उसके मधु-सुहागका दर्पण,
जिसमें देखा था उसने

वस एक वार विचित अपना जीवन-धन,
अवल हाथोंका अेक सहारा—
लक्ष्य जीवनका प्यारा—वह ध्रुवतारा—
दूर हुआ वह वहा रहा है
उस अनन्त पथसे करुणाकी धारा।
हैं करुणा-रससे पुलकित इसकी आँखें,
देखा तो भींगीं मन-मधुकरकी पाँखें;
मृदु रसावेशमें निकला जो गुजार
वह और न था कुछ, था वस हाहाकार।

उस करुणाकी सरिताके मलिन पुलिन पर,
लघु टूटी हुअी कुटीका मौन वढाकर
अति छिन्न हुए भींगे अंचलमें मनको—
मुख रूखे, सूखे अधर, त्रस्त चितवनको
वह दुनियाकी नज़रोंसे दूर वचाकर,
रोती है अस्फुट स्वरमें;
दुःख सुनता है, आकाश धीर,—
निश्चल समीर,
मृदु सरिताकी लहरे भी ठहर-ठहरकर।
कौन उसको धीरज दे सके?
दु खका भार कौन ले सके?
यह दुःख वह, जिसका नहीं कुछ छोर है,
दैव, अत्याचार कैसा घोर और कठोर है?
क्या कभी पोछे किसीके अश्रुजल?
या किया करते रहे सवको विकल?
ओस-कण-सा पल्लवोसे झर गया—
जो अश्रु, भारतका उसीसे सर गया।

श्री रामकुमार वर्मा

ये वुन्देलखण्डके पहाडी प्रदेशमें वड़े हुअे है। ये कवि, समालोचक, और नाटककार हैं। इनकी अभिनयात्मक शैली कविताको वहुत रोचक वना देती है। इनकी कवितामें सिर्फ कल्पना ही नही, वल्कि मनुष्य-जीवनका अनुभव भी मिलता है। 'चित्तोड़की चिता', 'अजलि', 'रूपराशि', 'चित्रलेखा', 'चन्द्र-किरण', 'निशीथ' और 'सकेत' इनके मशहूर काव्यसग्रह हैं।

ये ग़जरे तारोंवाले

इस सोते संसार वीच
जगकर, सजकर, रजनी-वाले!
कहाँ वेचने ले जाती हो
ये गजरे तारोवाले?
मोल करेगा कौन!
सो रही हैं उत्सुक आँखें सारी;
मत कुम्हलाने दो,
सूनेपनमें अपनी निधियाँ' न्यारी।
निर्झरके निर्मल जलमें
ये गजरे हिला-हिला धोना;
लहर हहर कर यदि चूमे तो,
किंचित विचलित मत होना।
होने दो प्रतिविम्व विचुम्वित,
लहरोंमें ही लहराना;

'लो मेरे तारोंके गजरे'
निर्झर स्वरमें यह गाना।
यदि प्रभात तक कोई आकर
तुमसे हाय! न मोल करे,
तो फूलों पर ओस रूपमें
बिखरा देना सब गजरे।

श्री रामनरेश त्रिपाठी

ये सन् १८८९ ईसवीमें जौनपुर जिलेके कोयलीपुर गाँवमें पैदा हुए। ये एक बडे मशहूर साहित्यकार हैं। ये अपनी 'कविता कौमुदी' के छः भागोंके लिए बहुत मशहूर हैं। यह संग्रह छापकर इन्होंने साहित्यकी अमूल्य सेवा की है। ये एक अच्छे राष्ट्रीय कवि हैं। इन्होंने 'मिलन', 'पथिक', और 'स्वप्न' तीन मनोहर खडकाव्य लिखे हैं, जिनमें जगह जगह पर देशसेवाकी भावना झलकती है। 'मानसी' इनका मशहूर काव्यसंग्रह है। 'जयंत' और 'प्रेमलोक' नाटकोंमें इन्होंने ऊँचे आदर्शोंको रखकर कल्पनाकी अच्छी दुनिया खडी की है।

पश्चात्ताप

सरके कपोलके उजालेमें दिवस, रात
केशोंके अँधेरेमें निकल भागी पाससे,
संध्या बालपनकी, युवापनकी आधी रात
मैंने काट डाली क्षणभंगुर विलाससे;
श्वेत केश झलके प्रभातकी किरणसे तो,
आँखें खुलीं कालके कुटिल मन्द हाससे;
मेरे करुणानिधिका आसन गरम होगा
कौन जाने मेरे शीतल उसाससे?

श्री ठाकुर गोपालशरणसिंह

ये सन् १८९१ में पैदा हुए। ये नईगढी इलाकेके ठाकुर हैं, मगर कविताके वडे शौकीन हैं। खडी वोलीमे कविता शुरू करनेवालोंमें से ये एक पुराने कवि हैं। कवियोमे इनका वडा आदर है। 'माधुरी', 'कादम्बिनी', 'मानवी', 'ज्योतिष्मती' और 'सागरिका' इनकी मशहूर रचनाएँ हैं।

ग्राम

प्रकृति सुन्दरीकी गोदीमें
खेल रहा तू शिशु-सा कौन?
कोलाहलमय जगको हरदम
चकित देखता है तू कौन?

जगके भोलेपनका प्रतिनिधि,
सहज सरलताका आख्यान!
विमल स्रोत मानव जीवनका,
तू है विधिका करुण विधान।।

छिपा महीके मृदु अंचलमें,
जगके मूर्तिमान अनुराग।
तुझसे ही सीखता जगत है,
औरोंके हित करना त्याग।।

भोली ललनाओंसे लालित
विश्व-पुष्पका पुण्य-पराग!
कृषकोंके श्रम-जलसे सिंचित
जगका छोटा-सा है वाग।।

होकर भी असभ्य तू ही है,
विश्व-सभ्यताका आधार।
स्वावलंबनकी समुचित शिक्षा,
पाता तुझसे है ससार॥

सरल वालकोका क्रीडा-स्थल
जगतीके कृषकोंका प्राण।
करता है इस विपुल विश्वका
तू ही सदा क्षुधासे त्राण॥

मानवताका प्रेम-निकेतन
आदि सभ्यताका इतिहास।
भ्रातृभाव, समता, क्षमताका,
तू है अवनीमें अधिवास॥

भोली चितवनसे तू जगको
सदा देखता है अविकार।
सबके लिए खुला रहता है,
सन्तत तेरे उरका द्वार॥

दया, क्षमा, ममता आदिक हैं
तेरे रत्नोंके भण्डार।
है निर्मल जल, शुद्ध वायु ही
तेरे जीवनके उपहार॥

छलसे रहता दूर किन्तु तू
बल-पौरुषमें है भरपूर।
तेरे जीवन-धन हैं जगमें
बस किसान एवं मजदूर॥

जगको जगमग करनेवाला
है तुझमें न प्रकाश महान।

पर मिट्टीके ही दीपकसे,
रहता है तू ज्योतिष्मान ।।

काँटे चुभते ही रहते हैं
उड़ती रहती तुझ पर धूल।
तो भी तू न मलीन होता है
विश्व-वाटिकाका मृदु फूल!

रखकर सबसे निपट निराला!
जगतीतलमें निज व्यक्तित्व।
करता है तू सफल सर्वदा,
अपना छोटा-सा अस्तित्व।

श्री मुकुटधर

इनका जन्म सन् १८९४ में हुआ। ये हिन्दीके लेखक पडि लोचनप्रसाद पाण्डेयके छोटे भाई है। और उनके असरसे इनको भी बचपनसे ही हिन्दी साहित्यका शौक लगा। छोटी उमरसे ही ये कविता लिखने लगे। ये अपने गाँव वालपुर, जिला विलासपुरमें ही अपने पिताकी स्थापित की हुई पाठशालामे शिक्षक है। इन्होंने अपने बड़े भाई पडित मुरलीधरके साथ मिलकर काव्यग्रंथ लिखे है। इनकी भाषा सरल है और ये प्रकृतिके सुन्दर दृश्योको कवितामें लानेमें बडे सफल रहे है। 'पूजा-फूल', 'शैल-वाला', 'लच्छमा', 'मामा', 'परिश्रम' इनकी मशहूर रचनाएँ है।

आराधना

प्रभुमंदिरकी नीरवतामें
कर विलीन अपने प्राण,
धर्मधुरीण हिन्दुओंको है,
धरते देखा मैंने ध्यान।

देखा है करते मसजिदमें
मुल्लाको भी दीर्घ पुकार !
पड़ी कानमें गिरजाघरकी
मधुर प्रार्थनाकी स्वर-धार।
पर वर्षाऋतुकी उष्मामें,
होकर श्रमसे क्लान्त महान,
हल जोतते किसान छेड़ता
है जब अपनी लम्बी तान;
सुन तब उसे वाटिकासे निज
करता मैं उर बीच विचार—
खेतोंमें यों आर्त्तस्वरसे
यह किसको है रहा पुकार !
या कि शिशिरकी शीत-निशामें
मींज रहा हो जब वह धान।
सुनता हूँ तब शैयासे मैं
उसका करुणा-पूरित गान।
भर जाता है जी, नेत्रोंसे—
निद्रा करती शीघ्र प्रयाण।
हृदय सोचता—जलते किसके
विरहानलसे इसके प्राण !

श्री फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'

इनका जन्म सन् १९१० मे स्यालकोटमें हुआ। पहले ये सरकारी नौकरीमें थे। ये नये ज़मानेके उगते हुए कवि हैं। अभी सात आठ वर्षसे ही इन्होंने काव्य लिखना शुरू किया है। जीवनकी समस्याओंको ही ये कविताओंमे बाँधते हैं।

कुत्ते

यह गलियोंके आवारा बेकार कुत्ते।
कि बख़्शा गया जिनको जौके गदाई॥

ज़मानेकी फटकार सरमाया उनका।
जहाँभरकी धुतकार उनकी कमाई॥

न आराम शबको न राहत सवेरे।
गिलाज़तमें घर, नालियोंमें बसेरे॥

जो बिगड़ें तो इक दूसरेसे लड़ा दो।
ज़रा एक रोटीका टुकड़ा दिखा दो॥

यह हर एककी ठोकरे खानेवाले।
यह फ़ाक़ोसे उकताके मर जानेवाले॥

यह मज़लूम मख़लूक़ गर सर उठाये।
तो इन्सान सब सरकशी भूल जाये॥

यह चाहें तो दुनियाको अपना बना लें।
यह आक़ाओंकी हड्डियाँ तक चबा लें॥

कोई उनको अहसासे ज़िल्लत दिला दे।
कोई उनकी सोई हुई दुम हिला दे॥

श्री भगवतीचरण वर्मा

इनका जन्म सन् १९०३ में हुआ। ये बड़े प्रतिभाशाली व्यक्ति है। आजकलके लेखको और कवियोमें इनका नाम मशहूर है। इन्होने पीडित और दलित मानवको अपनी कविताका विषय चुना है। इनकी भाषामे इनके व्यक्तित्वकी झलक है। वह न तो वोझिल सस्कृतमयी हिन्दी, न फारसीभरी कठिन उर्दू है। ये चलती मुहावरेदार खडी बोलीमे कविता लिखकर उसमे जान डाल देते है। 'मधुकण', 'प्रेम-सगीत' और 'मानव' इनके प्रसिद्ध काव्यसग्रह है। 'चित्रलेखा' और 'तीन वर्ष' इनके अच्छे उपन्यास है। और 'इस्टालमेन्ट' और 'दो बाँके' इनके सफल कहानीसग्रह है।

एकान्त रोदन

१

प्रतिध्वनि! क्यों रोती है तू? जले हृदयको रोने दे।
आँसूकी धारासे उसको, सारा विश्व भिगोने दे॥

कुहूनिशाके कंपित स्वरमें नीरवताका करुण कलाप।
उमड़ रहे हैं दबे भाव फिर रुक न सकेगा कभी प्रलाप॥

ध्वनि उठती है 'विचलित मत हो', किंतु न हूँगा अब मैं शांत।
तेरा अंक शून्य है, उसमें रोने आता हूँ एकान्त॥

२

सुख मिलता है व्यथित हृदयको अपनी व्यथा सुनानेमें।
स्वयं तड़पनेमें सुननेवालोको भी तड़पानेमें॥

स्वार्थी विश्व, कौन करता . किसी दूसरेकी परवाह।
हम हैं रोते, वे हँसते हैं, उनकी हँसी हमारी आह॥

आह! कृतघ्न विश्वका झोंका मुझे बनाता है उद्भ्रान्त।
तुझसे अपनी करुण कथा कहनेको आता हूँ एकान्त॥

एक ही कहानी

[श्री मीराजी]

यह भाई वह भाई
कैसे भाई, फेंका पाँसा
जालमें फाँसा सबको बनकी सैर दिखाई
तू भाई मैं भाई
कैसे भाई फिरसे वही बात दुहराई
बड़े बड़ोंने जो भी किया है
जो भी लिया है, जो भी दिया है
जैसे जैसे घड़ियाँ बीतें वही है होती आई
ध्यान किसीको है तो अपना
कैसे पूरा हो फिर सपना
कैसे कटेगी रैन? सवेरा दुखने घेरा '
जब भी देखा एक ही उलझन नये रूपमें आई
कुंभकरनकी नींदसे सदियोंका सोया दुर्योधन जागा
सब सुख भागा
पूरब पच्छिम हाहाकार मचाई
राजा डूबे, परजा डूबी, बोली रामदुहाई
सबसे दूर अकेला बैठा ज्ञानी सोचे
चलते समयने क्यों यह बात दुहराई

पंडित बालमुकुन्द 'अर्श'

इनके पिता बड़े मशहूर कवि है। ये नये ज़मानेके उठते हुए कवि है। उर्दू काव्यमे गीतोंकी जो नयी धारा शुरु हुई है, उसको इन्होंने अपनाया है। इनकी कविताओंका संबंध जीवनके साथ है। लोगोंके दिल पर इनकी कविताका बड़ा असर पड़ता है।

मेरे मनकी आशा जाग

मनका मनोरथ मिल जाएगा मनका कमल भी खिल जाएगा।
मनकी मुण्डेर पे बोल रहा है कल्पना रूपी काग।
मेरे मनकी आशा जाग।

निद्राका सुख मौतका सुख है, निद्रामें तो दुःख ही दुःख है।
रैन नहीं अब हुआ सवेरा, उठ निद्राको त्याग।
मेरे मनकी आशा जाग।

किस्मतके हेटे भी जागे, निद्राके बेटे भी जागे।
तू जागे तो फिर क्या कहना, जाग उठेंगे भाग।
मेरे मनकी आशा जाग।

मनमें ऐसी लय बस जावे, नागन बनके जो डस जावे।
लयका जहर चढ़े नस-नसमें, छेड़ दे दीपक राग।
मेरे मनकी आशा जाग।

श्री शबीर हसनखाँ 'जोश'

इनका जन्म मलीहाबाद, जिला लखनऊमें सन् १८९६ में हुआ था। ये पुश्तैनी कवि हैं। चार पुश्तसे इनके खानदानमें शायरी होती चली आई है। इनके वालिद साहबने इन्हें शायरी करनेसे रोका, इसलिए कि इस रंगमें पड़ जानेके बाद आदमी कुछ और काम नहीं कर सकता, और जायदादके बँटते चले आनेसे वह अब इतनी न रह गई थी कि अच्छी तरहसे खानदानका गुजर-बसर हो सके। मगर इनके दिलमें कुछ ऐसी चुभन और कसक थी कि इन्होंने अपने वालिद साहबके कहनेको न माना। इनकी कवितामें जोश, उत्साह, और मुसीबतोंका सामना करनेकी शक्ति भरी हुई है। इनका स्वाभिमान इनकी कविताओंमें झलकता है। पुराने रस्म-रिवाज सिर्फ पुराने होनेके कारण ये अपनानेसे इन्कार करते हैं। इनकी कविता जीवन-संगीतसे भरी पड़ी हैं। इनके कई काव्यसंग्रह छप गये हैं, जिनमें मशहूर ये हैं :— 'फिक्रे निशात', 'हर्फो हिकायत', 'शोलओ शबनम' और 'हर्फो कायनात'।

मग़रूर हो

"दिल हमारा जज्बयेगैरतको खो सकता नहीं।
हम किसीके सामने झुक जायँ हो सकता नहीं।।

राहेखुद्दारीसे मरकर भी भटक सकते नहीं।
टूट तो सकते हैं हम, लेकिन लचक सकते नहीं।।

हश्रमें भी खुसरवाना शानसे जायेंगे हम।
और अगर पुरसिश न होगी तो पलट आयेंगे हम।।

अहलेदुनिया क्या है और उनका असर क्या चीज है?
हम खुदामें नाज करते हैं बशर क्या चीज है?

नाज़ कर ऐ यार! अपनी दिलवरी पर नाज़ कर।
'जोश' सा मगरूर है तेरा ग़ुलामे कमतरीं।"

ईद मिलनेवाले

कहूँ क्या दिल पे क्या-क्या हौलनाक आलाम सहता हूँ।
न पूछ ऐ हमनशीं! क्यो ईदके दिन सुस्त रहता हूँ?

वोह सदमे जो लगे रहते हैं आसाइशकी घातोंमें।
वोह दुनिया सिसकियाँ भरती हैं जो तारीक रातोंमें॥

वोह चश्मा गमका सीनेसे ज़मींके जो उवलता है।
वोह गमकी करवटें जो आस्माँ शवको वदलता है॥

वोह झूठी राहतें जिनसे तपाँ हैं दर्दके पहलू।
वोह फीके क़हक़हे गिरते हैं जिनसे खूनके आँसू॥

वोह कौन्दे गमके रूहोंके उफक पर जो लपकते हैं।
वोह दिल जो सीनए ज़र्रातमें पैहम धडकते हैं॥

वोह झोंके नर्म जिनमें रात भर दम ही नहीं लेती।
गरीव इन्सानियतकी सुस्तरू गमनाक मौसीकी॥

वोह दिल मशगूल हैं जो ज़िन्दगीके दर्द-पैहममें।
वोह आँसू जो हैं गल्ताँ दीदये इगयाये आलममें॥

सवाए ईदके जिस वक़्त जल्वे मुस्कराते हैं।
यह सव रोते हुए मुझसे गले मिलनेको आते हैं॥

इवादत

इवादत करते हैं जो लोग जन्नतकी तमन्नामें।
इवादत तो नहीं है, इक तरहकी वोह 'तिजारत' है॥

जो डर कर नारे दोजख़से ख़ुदाका नाम लेते हैं।
इवादत क्या वोह ख़ाली वुज़दिलाना एक ख़िदमत है॥

मगर जव शुक्रेनेमतमें जवीं झुकती है वन्देकी।
वोह सच्ची वन्दगी है, इक शरीफ़ाना अताअत है।।

कुचल दे हसरतोको वेनियाज मुद्दआ हो जा।
ख़ुदीको झाड़ दे दामनसे मर्देवाख़ुदा हो जा।।

उठा लेती हैं लहरें तहनशीं होता है जव कोई।
उभरना है तो गर्के मौजय वहरेफना हो जा।।

ऐ मन काहे तू घवराये

(१)

वह फूट रही है पौ प्यारे
वह काँप रही है लौ प्यारे
देख वह जल-थल सव मुस्काये
ऐ मन काहे तू घवराये?

(२)

अँगड़ाई लेकर लहराकर
वह भोर परीने मुस्काकर
अपने झुमके ले झमकाये
ऐ मन काहे तू घवराये?

(३)

फैली सुनहरी धूप नदी पर
मचला रंग और रूप नदी पर
भागे रैनके भागे गाये
ऐ मन काहे तू घवराये?

(४)

घबराकर मनमें बोला मोर!
तन दहका, मनसे उठा शोर
जूँ सावन नदिया लहराये
ऐ मन काहे तू घबराये?

(५)

देख तू सर पर ताशे बजते
गाते घिरते घूम गरजते
कारे कारे बादर छाये
ऐ मन काहे तू घबराये?

(६)

आई वह गाती बादे बहारी
हिलती हैं बेलें डारी डारी
जस पापी जूडा खुल खुल जाये
ऐ मन काहे तू घबराये

(७)

कष्ट वचन मत बोल री प्यारी
घूँघटके पट खोल री प्यारी
आयें वह तेरे साजन आये
ऐ मन काहे तू घबराये?
काहे तू घबराये?
ऐ मन काहे तू घबराये?

श्री मधुसूदन

ये पूनाके रहनेवाले हैं। ये अकसर महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार सभाके मासिक पत्र 'राष्ट्रवाणी' में लिखते रहते हैं। इनकी एक कविता 'सन्देश' हम यहाँ देते हैं।

सन्देश

(१)

काँटोंमें रहकर भी कैसे
गुलाब हँसता रहता है।
स्वयं फूलकर कौन संदेशा
कहो जगतको देता है?

(२)

उजियाला दे मिटा अँधेरा
दीपक जलता रहता है।
तिल तिल जलकर स्वयं खुशीसे
दुनियासे क्या कहता है?

(३)

ऊँच-नीच पथरीले पथसे
नदी हमेशा बहती है।
टकराती, बल खाती, फिर भी
आगे क्यों बढ़ जाती है?

(४)

वर्षा, गरमी, जाड़ेको सह
पेड़ फूलता-फलता है।
फिर भी अपने मीठे फलको
आप कभी क्या खाता है?

(५)

इन फूलोंसे उन फूलों पर
दिनभर उड़ती रहती है।
मधुसंचय कर मधुमक्खी तब
मिहनतका फल पाती है।

(६)

गौर करो इन सन्देशों पर
बड़े अगर बनना चाहो।
नाम तुम्हारा रोशन होगा,
गुण उनके यदि तुम ले लो।

कठिन शब्दोंके अर्थ

जन्म कन्हैयाजी

पास पडोसन – निकटके मकानोमें रहनेवाली स्त्रियाँ

चचा – नन्द, जसोदाके पति

पँजीरी – एक प्रकारकी मिठाई जो आटेके चूर्णको घीमें भूनकर वनाई जाती है।

सूंठ सटोरा – जच्चाके लिए सूंठ डालकर वनाई गई वस्तुएँ

नेग – शुभ अवसरो पर सम्वन्धियो और आश्रितोको कुछ धन या वस्तु दिये जानेका नियम

आनन्द वधावा – प्रसन्नताके अवसर पर दी जानेवाली वधाई, अभिनन्दन

घुट्टी – वच्चेका पेट साफ करनेके लिए दस्तावर दवा

अस्पन्द – काले दाने, औरते इन्हें वच्चोको नज़र लगनेसे वचानेके लिए जलाती है।

भूसी – चोकर (गेहूँ और जवके छिलके जो आटा छाननेके वाद वच जाते है।)

हँसली – स्त्रियोंके गलेमें पहननेका एक मंडलाकार गहना

खडवा – कडा (हाथमें पहननेका गहना)

महरभरी – मेहर, दया, कृपासे भरी हुई

भवें – भौं, भृकुटी, भौह

ऐ वीर – हे भाई या हे सखी; यहाँ हे सखी

तिहारे – तेरे, तुम्हारे

वाले – वालक

आस मुरादोवाला – आशा आकाक्षा-वाला

नेक रती – खुश किस्मती

कुनवा – कुटुम्व, परिवार

मोपर – मुझ पर

आदमीनामा

मुफलिसोगदा – गरीव और भिखारी

ज़रदार – मालदार

वेनवा – गरीव, जिसके पास कुछ न हो

नेमत – स्वादिष्ठ भोजन

टुकडे मांगना – भीख मांगना

इमाम – अगुआ, मुसलमानोंके धार्मिक कृत्य करानेवाला मनुष्य
ख़ुतबाख़्वाँ — लोगोंको नसीहत देनेवाला
ताडता है – डाँटता है
याँ – यहाँ
जानको वारे है – जानको निछावर करता है
तेग – तलवार
पगडी उतारना – बेइज़्ज़ती करना
नक़ीब – बादशाहकी सवारीके आगे आवाज लगानेवाला चोबदार
प्यादे – पैदल चलनेवाला दूत, हरकारा
सवार – घुड़सवार
सुराही – कूजा, मिट्टीका बरतन
दौडे बगलमें मार – काँखमें दबा कर दौड़ते है
कहार – मजदूर

'प्रीति न कीजो कोय'

उल्फत – प्रेम
गम खाना – सहन करना, दुख उठाना
जिगरकी बेकली – चित्तकी व्याकुलता
औ – और
सिसकना – रह रह कर रोना
अश्क – आँसू
लोटना – व्याकुलताकी अवस्थामें ज़मीन पर गिरना, लेटना
बेताब – बेचैन, व्याकुल
कफे . . . होता है – निराश हाथोंको मलमल कर पछताना पड़ता है।
आपी – आप ही, स्वय, खुद
ढँढोरा पीटना – घोषणा करना

यशोधराकी उलझन

यह कविता गुप्तजीके प्रसिद्ध खण्डकाव्य 'यशोधरा' से ली गई है। 'यशोधरा' नारी-जीवनकी एक करुण कहानी है। गुप्तजीने 'आँचलमें है दूध और आँखोंमें पानी' कहकर इस काव्यमें अबला जीवनके वात्सल्य और विरह दोनो पक्षोका निरूपण किया है। गौतमके गृहत्यागसे लेकर उनके बुद्ध रूपमें वापस लौटने तक यशोधराकी विभिन्न मनोदशाओंका चित्रण इस काव्यमें बडे ही मार्मिक ढगसे किया गया है।

इस कवितामें उस प्रसगका वर्णन है जब गौतम अपनी पत्नी और पुत्रको सोता हुआ छोडकर

चोरी चोरी चले गये। यशोधराको इसका भारी दु:ख है। 'सखि, वे मुझसे कहकर जाते' कहकर वह अपना दु:ख प्रकट करती है।

सिद्धि-हेतु — सिद्धि प्राप्त करनेके लिए

व्याघात — विघ्न, आघात, प्रहार

पथ-बाधा — रास्तेकी रुकावट

सुसज्जित करके — सजाकर, बना ठनाकर

प्राणोंके पणमें — प्राणोंकी बाज़ीमें

क्षात्रधर्मके नाते — क्षत्रियोंका धर्म पालन करनेके लिए

विफल गर्व — बेकारका आत्माभिमान

निष्ठुर — कठोर हृदयवाला, निर्मोही

सदय हृदय — दयावान दिलवाला

तरस खाते गये — दिलमें अरमान लिए हुए ही चल दिये

इस जनके — यशोधराके

उपालंभ दूँ — उलाहना दूँ, शिकायत करूँ

अधिक भाते — ज्यादा अच्छे लगते

अपूर्व-अनुपम — अनोखी वस्तु

काबा

काबा — अरबके प्रसिद्ध शहर मक्का शरीफमें आया हुआ एक स्थान, जहाँ मुसलमान हज करने जाते हैं।

विध्वस्त — उजडा हुआ, नष्ट

प्रशस्त — श्रेष्ठ, भव्य, प्रशसनीय

अभिराम — सुन्दर

धाम — स्थान

'असवद' पाषाण — काबा धामकी दीवारमें जड़ा काला पत्थर, यात्री लोग उसे हाथसे छूते हैं और चुम्बन करते हैं।

संस्थापित करना — जमाना, रखना

जताना — बताना, सिद्ध करना

नाद — आवाज़, ध्वनि

टुक मौन — थोडी देर मौन रहकर

भौंह तनना — गुस्सा आना

धीर विवेक — धीरजसे भरा ज्ञान

त्राण — रक्षा, मुक्ति, झगड़ेसे छुटकारा

साधु — अच्छा, उचित

सुयुक्ति — तरकीब

अनिवार्य — अवश्य

सस्थापन-कार्य — स्थापित करनेका काम

मुसीबत

अहवाल — हाल, विवरण

बदज़न — शक्की, शक करनेवाला

जताना — बतलाना, प्रकट करना, यकीन दिलाना

मिल्लत – मेलजोल
फरिश्ता – देवदूत, देवता
बेहतर – ज़्यादा अच्छा
जियादा – अधिक, ज्यादा

हिम्मत न हारो

अहले-हिम्मत – हिम्मत रखनेवाले
यावर – मददगार
न आया मयस्सर – यदि न मिला, नही प्राप्त हुआ
धूप खाना – तक़लीफ उठाना
राहत – सुख, चैन
इत्तफाक़ी – संयोगसे होनेवाली
बसर – मनुष्य
लाज़िम – ज़रूरी
आरज़ी – जो टिकाऊ न हो, क्षणभगुर
अड़े वक़्त . . . न झाँको – अति कठिनाईके अवसर पर तुम दूसरेकी मददके लिए बगलें न झाँको
हाँकना – चलाना

फूल और काँटा

वर वसन – उत्तम कपडा
अनूठा – अनोखा
जीकी कली खिला देना – प्रसन्न कर देना
आंखमें खटकना – बुरा लगना
सुर-सीस – देवका मस्तक (शीश)
कुलकी बडाई – परिवारका बड़प्पन

चाह

चाह – इच्छा, आकांक्षा
सुरबाला – देवबाला
ललचाना – आकर्षित करना
इठलाना – गर्व करना, नाज़ करना

क़ैदी और कोकिला

रह रह जाना – रुक जाना, चुप हो जाना
बटमार – डाकू
हिमकर – चन्द्रमा
कालिमामयी – अधकारयुक्त
हूक पड़ना – हृदयकी पीड़ासे कराहना
मृदुल वैभवकी रखवाली – सुन्दर संपत्तिकी रक्षक
घर्घर – साँसके आने-जानेसे उत्पन्न शब्द
हा-हा-कार – व्यर्थका शोरगुल
उभय – दोनो
आली – सखी
दावानल – वनमें लगनेवाली आग
रजनी – रात
शासनकी करनी – हुकूमतके कारनामे
लोह-शृंखला – लोहेकी ज़ंजीर

हुकृति – हुकार
व्याली – साँपिन, सर्पिणी
गुनाह – कसूर, पाप
विषमता – असमानता
रणभेरी – युद्धमें वजनेवाली दुदुभी
मोहन – मोहनदास क० गाधी
आसव – अर्क, दारू, मदिरा

रुबाइयाँ

रुबाई – चार मिसरोका एक छद जिसमें नीति और उपदेशकी बडी बडी बातें थोडे शब्दोमें और मुहावरेदार भाषामें कही जाती है।
लिट्रेचर – साहित्य
हिस्ट्री – इतिहास
शेख – इस्लाम धर्मके आचार्य
ताल्लुक – सबध
तर्क कर – छोडकर, त्यागकर
कोफ्त – परेशानी, पीडा, दु ख
कलरकी – कारकुनी, मुशीगिरी
डबल रोटी – पाव रोटी
मेरे अमलसे – मेरे आचरणसे
दलील – तर्क, युक्ति
आप – स्वय, खुद (आत्मा)
विरादर – भाई
दौर – काल-चक्र, ज़माना
पुन – पुण्य
मगन – खुश
तहज़ीव – सभ्यता
दिक्कत – परेशानी
मज़ाहव – मज़हव, धर्मका बहु-वचन
कायम – स्थित, मौजूद
फकत – केवल, सिर्फ
ईमान – धर्म, सचाई
थियेटर – ड्रामा, नाटक
यार – मित्र
इस्पीचें – भाषण
दुहाई – फरियाद
करज़न – लॉर्ड करज़नकी तरहका मूंछ मुडानेका फैशन, 'कर्ज़न फैशन'
जन – स्त्री
चेहरेकी आवरू – मुंहकी रौनक, सुन्दरता
हलका – जो भारी न हो, छोटा
इव्तदा – शुरुआत
इन्तहा – अत
चन्द – कुछ, थोडी
वीवियाँ – स्त्रियाँ, औरतें
गैरते कौमी – जातीय लज्जा
ज़मीमें गड जाना – शर्मिदा होना
तालीम – शिक्षा
खातूने खाना – घरकी स्त्री

सभाकी परी – सभा सोसायटियोंकी शोभा बढ़ानेवाली
ज़ीइल्मो मुत्तकी – विद्वान और पवित्र
मुन्तज़िम – प्रबंध करनेवाले
उस्ताद – गुरु, शिक्षक
उस्तादजी – रंडीका भड़वा

लन्दनको छोड़ लड़के

पास – परीक्षा पास करना
वतनका रुख़ कर – वतनकी तरफ मुँहकर
रुखसते सफर – सफ़रकी इजाज़त
कापी – नकल, अनुकरण
राह नापना – मारे मारे फिरना
दीनो तरीक – धर्म और उसकी रीत
क्या मुन्तज़िर है इसका – क्या इस इन्तज़ारमें है
मुन्तज़िर – इन्तज़ार करनेवाला
खस्ता हाल – खराब हाल
मर ले – हैरान और परेशान हो जाय
मगरिबके मुरशिद – पश्चिमके गुरु, विद्वान
पीराने मशरिकी – पूर्वके महात्मा
फ़ैज़की नज़र ले – परोपकारकी सीख ले
सखुनवर – साहित्यिक, कवि
कलामे 'अकबर' – अकबरका काव्य
दामन – पल्ला, झोली

'मानव–जीवन'

चिर – बहुत दिनो तक रहनेवाला
अविरत – लगातार
परिपूरन – परिपूर्ण, सब तरहसे भरापूरा
घन – बादल
ओझल होना – छिप जाना
उत्पीड़न – पीड़ा
निशा-दिवा – रात-दिन
आनन – मुँह

दुख-सुख

व्यसन – दुर्गुण, बुरी आदत
प्रमाद – भ्रांति
पुरुषार्थ – पराक्रम, शक्ति
कुन्दन – खालिस सोना
क्षितिज – वह सीमा जहाँ आकाश और पृथ्वी मिलते नज़र आते हैं।
झुटपुटा – ऐसा समय जब कि कुछ अंधकार और कुछ प्रकाश हो
सिहर उठे – काँप उठे, डर गये
कर्मठ – काममें लगे हुए, कर्ममें स्थिर
धीर – धैर्यवान

क्या हो नहीं सकता ?

मरहम – मलम
कातिल – कत्ल करनेवाला
इलाही – हे ईश्वर
ख़ैर हो – कुशल हो
ज़ख़्म – घाव
कमालेबुज़दिली – पहले दर्जेकी कायरता
पस्त होना – नीचा होना
अपनी आँखोमें – खुदकी नज़रमें
उभरना – ऊँचा उठना, उन्नत होना
बेमायगी दिलकी – दिलकी गरीबी, दिलका छोटापन
कौन कतरा – कौनसी बूंद

कौमी मुसद्दस

मुसद्दस – ६ चरणोका फारसी छन्द जिसके पहले चार चरणोमें और अंतिम दो चरणोमें अलग अलग तुक रहती है।
फैज़ेआम – व्यापक दान
निफाको – द्वेष
जुहल – मूर्खता
दूरसे सलाम करो – कोई वास्ता न रखो
न काम कर जाना – काम करनेका ढग न जाना
ख्वाब – स्वप्न
बेदार – जाग्रत
दीन – धर्म
रायगाँ – व्यर्थ
बेडियाँ – बंधन (कैदियोंके पैरोमें बाँधी जानेवाली लोहेकी ज़ंजीर)
कारेख़ैर – भला काम
चारसू – चारो तरफ
रूबरू – समक्ष, सामने
आरज़ू – अभिलाषा

कारेख़ैर

खाकका पुतला – इन्सान
ख़ैरात – दान
कै दाँत है मुँहमे – क्या हाल है
राहे मौला – ईश्वरके नाम पर
आकवत – परलोक
तोशाह – रास्तेका खाना, पाथेय
तुफ़्तह जानोका – जले हुओ, तपे हुए, दग्ध हृदयोका
राहतरसाँ – चैन देनेवाला
तिश्नादहानोका – प्याससे दुखी हुओका
शरीके दर्देदिल – दुखियोकी पीडामें शामिल होकर
दुख बटाना – सहानुभूति प्रकट करना
आफतज़दा – आफतमें फँसा हुआ

वेकसकी खातिर–निस्सहायके लिए
जान पर सदमा उठाना – प्राणोको संकटमें डालकर पीड़ा सहना
आँसू वहाना – सहानुभूति प्रकट करना
वदनसीवी – दुर्भाग्य
मुफ़लिस – गरीव
इम्दाद देना – मदद देना
गुज़ारेको – जीवन-निर्वाहके लिए
सखी – दाता, दानी
फ़रियादरस वनकर – इन्साफ करने वालेकी हैसियतसे
वेनवा – निराश्रित
सदा – पुकार, आवाज़
गदा – फकीर

कुछ कर न सका

ज्वाला – आगकी लपटें, अग्निशिखा
जगतीका तम हर न सका – संसारके अंधकारको दूर न कर सका

वापूके प्रति

नि:संशय–विना संशयके, निश्चय ही
सदियोंके वाद – हज़ारो वर्षोंके वाद, शताब्दियोंके पश्चात्
कितना – किस हद तक
दावानल – भयंकर आग (जो वनमें अपने-आप लगती है)
साधक – तपस्वी, साधना करनेवाला
खड्ग-धार-सा – तलवारकी धारके समान (तीक्ष्ण, कठिन)
चुनौती – ललकार, आह्वान
दनुजता – दानवता
कुश्ती लेना – अकेले लड़ना
कवच – वख्तर
फिरकेवारी – कौमपरस्ती (कौम-वाद)
अजगव – (शिवजीका) धनुप
प्रत्यंचा – धनुपकी डोरी

जूठे पत्ते

हाथ पसारना – माँगना, याचना करना
खारे फव्वारे – खारे आँसुओकी अविरल धाराएँ
विप्लवकारी – क्रांतिकारी
टेंटुआ घोटना – गला दवाना
जगपति – विधाता, ससारका स्वामी
घृणित विकृति – घृणासे भरा विगड़ा हुआ रूप
समता-सस्थापन – वरावरी कायम करनेका काम
आसरा – सहारा
अलख शक्ति – वह शक्ति जो दिखलाई न दे
थू है – धिक्कार है
दलित – कुचला हुआ

वीभत्स – घृणित

प्रलयकर – प्रलय मचा देनेवाला, शिव

स्नायु – शरीरके अदरकी नसें, धमनियाँ

मज़लूम – पीड़ित

चिर दोहित – लम्बे अर्सेसे शोषित

निद्रा सम्मोहित – नीदमें वेहोश

अनाचार – दुराचार, कुकर्म

अम्वार – ढेर

जनखा – नपुसक

जिहालत – मूर्खता, अज्ञान

क्रोधानल – क्रोधकी आग

अन्याय

ऐश – चैन

लेखकी रेखा – नसीवकी लिखावट

कँगला – कगाल, गरीव

चाला – चाल, वर्ताव

त्याग

वेगाना – पराया

नरसिंघा – ताँवे या पीतलका वना हुआ मुँहसे फूंक कर वजाया जानेवाला वडा वाजा

खामोश – शात, चुप

रेखा लेखा – नसीवकी रेखा

फूटी – उत्पन्न हुई, पनपी

अल्हड़ – लापरवाह

अनेल – अव्यवस्थित

शहनाई – तुरही, एक वाजा

शुगन शगून – मागलिक कर्म

डोमनी – गाने वजानेवाली डोमकी स्त्री

छैलव – सुन्दर

सोहला – मागलिक गीत

ऋतुराज – वसन्त ऋतु

दिलकश – दिलको खीचनेवाला, आकर्षक

हाथ पराये डोर – पराये हाथमें जीवनकी डोरी है

उलटी हो गईं सब तदवीरें

तदवीर – युक्ति, तरकीव, उपाय

वीमा-ए-दिल – दुःखी दिल

काम तमाम किया – मार डाला

अहदे जवानी रो रो काटा – जवानीका समय रो रोकर व्यतीत किया।

पीरी – वुढ़ापा

नाहक – व्यर्थ

मजवूर – लाचार

तोहमत – कलक, इल्जाम

मुख्तारी – जी चाहे जैसा करनेकी स्वतंत्रता

कावा – मुसलमानोका तीर्थस्थान

अवस – नाहक, व्यर्थ

किवला – मक्का

हरम – पाक
अहराम – नापाक
कूचा – गली
बाशिन्दा – रहनेवाला, निवासी
सपेदो-सियहमें दखल – बुराई भलाईमें हस्तक्षेप करनेका अधिकार
जूं तूं – जैसे तैसे
दीनो-मजहब – मत, धर्म
क़शका खींचा – तिलक लगाया
दैर – मंदिर
तर्क इस्लाम किया – इस्लामको छोड़ दिया

क्या कर चले !

फकीराना – फ़कीरोंकी तरह
सदा – आवाज़
दिल उठाकर – विरक्त होकर
नाउम्मेदाना – निराशासे भरी
बेखुद किया – बदहवास कर दिया
जबी – माथा, मस्तक
सिजदा – प्रणाम, दडवत
हक़े बदगी – बंदगीका हक़, प्रार्थना करनेका फर्ज़
अदा कर चले – पूरा कर चले
परस्तिश – पूजा
बुत – मूर्ति, माशूक
सभीकी – सबकी, प्रत्येककी
खुदा कर चले – परमात्मा बना दिया
गयी उम्र . . . . ग़ज़ल – ग़ज़लके शेर बनानेकी फ़िक्रमें आयु बीत गई।
फ़न – विद्या, कला

कौन पहुँचा देगा उस पार ?

यह कविता श्रीमती महादेवी वर्माके 'यामा' नामक काव्य-संग्रहसे ली गई है। यह छायावादी कविताका सुन्दर नमूना है। कवयित्री इस पारके (सासारिक) दु खोंसे घबराकर उस पार जानेकी कल्पना करती है। मार्गमें अनेको बाधाएँ है। ससार-सागरके थपेडोंसे जीवन-नैया डगमगाने लगती है। अंतमे उसे यह रहस्य समझमे आता है कि मॅंझधारमे डूब जाना ही पार हो जानेका एकमात्र साधन है।

घोर तम – गहन अधकार
मारुतका वेग – हवाका बहाव
प्रतिकूल – उल्टा, विपरीत
पर्वतमूल – पर्वतोकी नीव
बारंबार – बार बार
पर्वताकार – पर्वतके समान विशाल आकारवाली

हाहाकार – गर्जना

फेनिल उच्छ्वास – झागोसे भरे उसास (श्वास)

तरी – नाव

उपहास – हँसी

ग्रास करने – खा जानेके लिए

तरिणी – नाव

जलचर वृंद – पानीमे रहनेवाले जन्तुओका समूह

काला सिन्धु अनन्त – जिसका अंत न दिखलाई दे ऐसा विशाल और गहन काला समुद्र

उत्ताल अपार – जिनका ओर छोर नही है ऐसी ऊँची तरगें

बुझ गया . . . प्रकाश–उस नक्षत्रका प्रकाश भी बुझ गया

रैन मनोरथ फूल – रात्रि काले कपडोमें सुसज्जित होकर बोली — अपनी कामनाके फलोको बिखेर दो। अर्थात् रात्रिके आने पर अन्धकार गहन हो गया और आशा निराशामें परिणत होने लगी।

कर्णाधार — खिवैया, माँझी

पलमें आना – क्षणभरमे आना

मधुमय – मीठी

मोहक – मोह लेनेवाली

कितनी दूर किनारा!

माँझी – मल्लाह, नाव चलानेवाला

हचकोला – धक्का

दूभर – कठिन, मुश्किल

धार – नदीका प्रबल प्रवाह

उभारा – ऊपर उठाया

बढ़ते चलो

मायूस निगाह – निराश आँखे

फाँदना – लाँघना, उछलकर पार करना

सहरा – रेगिस्तान

विदाके समय

यह कविता पुराने वर्षकी विदाई और नये वर्षके आगमनको सूचित करती है। समय गतिशील है, उसे बाँधकर नही रखा जा सकता। पुराना वर्ष समाप्त होता है तो नया वर्ष हर बार नई आशा और उत्साहके साथ लौट आता है।

सरित्-प्रवाह – नदीका बहाव

मलयानिल – मलय पर्वतसे आनेवाला शीतल-मद-सुगन्ध पवन

नव नूतन मधुयुक्त – नया और नये मधुसे भरपूर

गृह-कपोत – घरका पालतू कबूतर

अनन्त – आकाश

नूतनका हर्ष – नयेपनका उल्लास

एक फूलकी चाह

यह कविता सियारामशरणजी गुप्तके 'दैनिकी' नामक काव्य-संग्रहसे ली गई है। 'दैनिकी' में आपने कवियोंके द्वारा उपेक्षित दैनिक जीवनके साधारण विषयोंको लिया है।

यह कविता आपने अछूतो-द्धारकी भावनासे लिखी है। एक हरिजन अपनी लाड़ली बेटीकी हठ पूरी करनेके लिए 'देवीके प्रसादका एक फूल' लेने मंदिरमें जाता है। वहाँ उसकी जो दुर्दशा हुई उसे काव्य खुद बताता है।

उद्वेलित कर — उमड़ा कर
अश्रु-राशियाँ — आँसुओंका खज़ाना
महामारी — प्लेग
प्रचण्ड — विकराल, भयंकर
क्षीण-कण्ठ — धीमा स्वर
मृतवत्साओंका — जिनके बच्चे मर गए हैं ऐसी माताओंका
रुदन — रोना
दुर्दान्त नितान्त — बिलकुल बेकाबू
कृश रव — क्षीण आवाज़
निहारना — देखना
तनु — तन, शरीर
ताप-तप्त — बुखारसे जलता हुआ
विह्वल — बेचैन
तप्त अंगारमयी — अंगारेकी भाँति तपी हुई
देवीकी छाया — देवीका प्रभाव
अरुण रागसे . . . नभस्थलका — आकाशका ललाट उषाकी लालीसे रँग गया था। अर्थात् प्रातःकाल होनेको था।
झड़-सी . . . निष्प्रभ होकर — तारोंकी पत्तियाँ धुंधली और तेज-हीन होकर लगभग विलीन हो गई थीं।
नीड — घोंसला
सलिल सुधा — अमृतरूपी जल
अशुचि — ग्लानि
लग्न — लीन, लगी हुई
मुद-मग्न — प्रसन्न, आनंदविभोर
अक्षम — असमर्थ
सिंहपौर — मुख्य दरवाज़ा, सदर फाटक
धूर्त — छली, धोखेबाज़
परिधान किये हैं — वस्त्र पहने हैं
कलुषित करना — मलिन करना
चिर कालिक शुचिता — चिरकालसे चली आई पवित्रता
गरिमा — महिमा

रुबाइयाँ

हयात — जीवन, ज़िंदगी
कज़ा — मृत्यु

वेदिल्लगी – विना दिल लगाये, विना मुहव्वत किये

खिज्र – वहुत अधिक

ववक्ते मर्ग – मौतके समय

राहे फना – मौतका मार्ग

जव तक चली चले – जव तक चलना सभव हो

हवाये शौक – शौककी हवा, मनकी मौज

चमन – वाग

अपनी वलासे – हमारी तरफसे (हमें क्या परवाह है)

वादे सवा – सुवहकी हवा

गर मारा तो क्या मारा?

वेकस – असहाय

वेदादगर – अन्यायी

आपी – आप ही, स्वय

आपको – आपेको, अहको, अभिमानको

अकसीर – वह धातु जो दूसरी धातुओको सोना वना दे; सव रगोको नष्ट करनेवाली औपधि

अकसीरगर – कीमियागर

पारा – चादीकी तरह चमकीली और तरल धातु

मूज़ी – दुष्ट

नफ़्सेअम्मारा – इन्सानकी वह इच्छा जो उसे वुरे कामोंके लिए प्रेरित करती है

निहग – मगरमच्छ

अज़दहा – अजगर

कौल – वचन, प्रतिज्ञा

हाथ पर हाथ मारना – वचन देना

तुफग – वदूक

ज़ाहिर न था – प्रकटमें दिखलाई नही देता था

कातिल – घातक, हत्यारा

इलाही – हे परमात्मा

ताकके – निशाना वनाकर

रिन्दे ख़राव हाल

रिन्द – शरावी

ज़ाहिद – ईश्वरभक्त

पराई क्या पडी – दूसरेसे क्या लेना देना है, तू दूसरेकी चिन्ता क्यो करता है?

अपनी नवेड तू – तू अपना काम देख

पजा – हाथ

जनूँ – दीवाना

सरो शोरसे – हल्ले गुल्लेसे

सग – कुत्ता

दर्वाजा . . भेड तू – ऐसे ज़लील आदमियोंके लिए तू अपने घरका दर्वाज़ा वद कर दे।

कोई उम्मीद वर नहीं आती

मसाइले तसव्वुफ – तत्त्वज्ञानकी वाते

वयान – कहनेका ढग

वली – पहुँचा हुआ आदमी

वादाख्वार – शराव पीनेवाला

कोई उम्मीद .... आती – कोई आशा फलीभूत नही होती

कोई सूरत ... आती – कोई तरकीव नही सूझती

मुऐयन – निश्चित, तय किया हुआ

हाले दिल – दिलका हाल या हालत

क्या वात कर नही आती – क्या वात करना नही आता?

आरजू – अभिलाषा

जहाँ कोई न हो

हमसखुन – साथी, शायर

हमज़वाँ – मेरे जैसा लिखनेवाला

वेदरोदीवार-सा – विना द्वार और दीवारका-सा

हमसाया – पडोसी

पासवाँ – रक्षक

तीमारदार – रोगीकी सेवा करनेवाला, परिचारक

नौहाख्वाँ – रोनेवाला, शोक मनाने वाला

क्या होता?

वेहिस होना – होश-हवास खो वैठना

ज़ानू – घुटना

ज़ानू पर धरा होता – ईश्वरकी इवादत करता होता

विसाले यार

विसाले यार – प्रेमीसे मिलाप

यही इन्तज़ार – सिर्फ़ इन्तजार

खुशीसे मर न जाते – अवश्य ही मर जाते

तीर नीमकश – ऐसा तीर जो आधा अन्दर आधा वाहर हो

ख़लिश – पीडा

नासेह – उपदेशक

चारहसाज – इलाज करनेवाला, उपचारक

गमगुसार – दु.ख दूर करनेवाला

शवेगम – जुदाईकी रात

मरके – फिदा होकर

रुसवा – वदनाम, अपमानित

हुये क्यो न गर्के दरिया – नदीमें क्यो न डूव गए

जनाज़ा – शव, अरथी

जनाज़ा उठता – शवको उठाकर ले जाना पडता

मज़ार – कवर, मकवरा

यगाना – वेजोड, वेमिसाल
यकता – अकेला
दुईकी वू – द्वैतकी भावना
दो चार होना – मिलना

मेरा जीवन

क्रीडा – खेल
असार – जिसमें सार न हो, वेकार
सुख-सार – सुखोका सार
उल्लास – आनन्द, प्रसन्नता
आलोकित – प्रकाशित
स्वर्णसूत्रसे वलयित – सोनेके धागेसे
गुथे हुए

झाँसी-रानीकी समाधि पर

झाँसीकी रानी लक्ष्मीवाईको कौन नही जानता? सन् १८५७ मे हिन्दुस्तानकी आजादी हासिल करनेके लिए विधवा रानी लक्ष्मीवाईने घर छोडकर तलवार हाथमें ली थी। अग्रेजोंके साथ लोहा लेते हुए रानी ग्वालियरमें स्वर्ग सिधारी थी। ग्वालियरके राजाने वहाँ एक लघु समाधि वनवाई है। यह काव्य रानीकी 'अतिम लीलास्थली' पर वनवाई गई समाधिके प्रति है।

स्वतत्रता . फेरी – अपने प्राण न्योछावर करके जिसने स्वतत्रताकी प्रेरणा दी।
लघु – छोटी, सामान्य
अतिम लीलास्थली – वह स्थान जहाँ उसने (लक्ष्मीवाईने) लडते लडते प्राण त्यागे थे
मरदानी – मर्दकी जैसी (वहादुर)
यही कही . . माला-सी – हृदयकी मालाके समान टूट कर वह यही किसी स्थान पर विखर गई अर्थात् प्रजाजनोंके हृदयो पर राज करनेवाली रानीकी जीवनलीला यही कही समाप्त हुई थी।
फूल – हड्डियाँ, अस्थियाँ
स्मृति-शाला – यादगारकी जगह
वीर वाला – वहादुर रमणी
आहुति . ज्वालासी – हवनमें डाली जानेवाली सामग्री (आहुति) की भाँति उसने अपने प्राणोका वलिदान कर दिया। चिता पर चढकर वह ज्वालाकी भाँति प्रज्वलित हो उठी अर्थात् मृत्युके पश्चात् उसकी कीर्ति और भी अधिक वढ गई।
यथा – जैसे
निहित – स्थापित, अदर रखी हुई
निशीथ – रात

क्षुद्र जन्तु – नीच पशु, कुत्ते (सियार आदि)

अमर गिरा – अमर वाणी

हिमालयके प्रति

भारतके उत्तरमें स्थित हिमालय युग युगसे भारतकी रक्षा करता आया है। पर कविको लगता है जैसे कुछ समय से वह महान योगीकी भाँति समाधिमें मग्न हो गया है। वह उससे देशकी दशा देखनेको कहता है और चाहता है — क्रांति मचे और हम नवयुगके साथ आगे बढ़ें।

नगपति – पहाड़ोका राजा

साकार – अच्छे आकार या रंग-रूपवाला

दिव्य – अलौकिक, स्वर्गीय

विराट – बहुत बड़ा

पौरुषके पुंजीभूत ज्वाल – पुरुषार्थ की एकत्रित शक्ति

हिमकिरीट – बर्फका मुकुट, सिर पर पहननेका आभूषण

दिव्य भाल – चमकीला, उज्ज्वल ललाट

अजेय – जिसे जीता न जा सके

निर्बन्ध – बन्धन रहित

गर्वोन्मत्त – स्वाभिमानमें सिर ऊँचा रखनेवाला

निस्सीम व्योम – अनंत आकाश

वितान – तंबू, मंडप, बडा चँदोवा

अखण्ड – जिसमें रुकावट न हो, जो न टूटे

चिर समाधि – जिसका कभी अन्त न हो ऐसी

यतिवर – श्रेष्ठ योगी

महाशून्य – आकाश

निदान – हल

विषम – भीषण, विकट

नयनोन्मेष – आँखें खोलना

दग्ध – जला हुआ

पद पर – तेरे चरणो पर

पंचनद – पंजाबकी पाँच नदियाँ

अमिय धार – अमृतकी धारा

विगलित – पिघला हुआ, द्रवित

क्रांत – जिस पर आक्रमण हुआ हो

सीमापति – सीमाके रक्षक

कराल – भयानक

चतुर्दिक – चारो दिशाओंसे

व्याल – साँप

अशेष वैभव – अनन्त संपत्ति

वीरान – उजाड

द्रुपदा . . . खुले – पांडवोकी पत्नी द्रौपदी दुर्योधनकी सभामें चोटीसे घसीट कर लाई गई थी। तेरे सामने ऐसी कितनी ही द्रौपदियोंकी लाज गई है।

ज्वाल वसत – आगका फाग

जौहर व्रत – एक प्रथा जिसके अनुसार शत्रुके विजयी होते ही सारी राजपूत स्त्रियाँ धधकती चिताओमें कूद कर प्राणोका अत कर देती थी।

वृन्दा – वृन्दावन

घनश्याम – श्रीकृष्ण

धरा – पृथ्वी

विराट स्वर – गर्जना

निनाद – आवाज़

शैलराट – पर्वतोका राजा

कुहा – कोहरा

प्रमाद – अन्त करणका भ्रम

कौमी गीत

चिश्ती – शेख़ मोय्युद्दीन चिश्ती। आप एक वडे पीर थे। आपकी दरगाह पर हर साल अजमेरमें वडा मेला लगता है।

पैगामे हक – ईश्वरका सन्देश

वहदत – एकता, ईश्वर एक है

तातारी – तातार (तुर्कस्तान) देशके रहनेवाले

हिजाजी – हिजाज (ईरान) देशके वासी

दश्ते अरव – अरवका रन

इल्मो हुनर – विद्या और कला

हकने – ईश्वरने

जर – सोना

मिट्टी . सोना दिया था – जिसकी ज़मीन वहुत अधिक उपजाऊ थी

दामन – पल्ला

तुर्क – मुगल वादशाह

टूटे थे . . आसमाँसे – दीन धर्मकी रक्षाके लिए जो लोग फारिससे हिन्दुस्तानमें आ गए (पारसी)

ताव – चमक

कहकशाँ – आकाश गगा

मीरे अरव – मुहम्मद साहव

कलीम – हज़रत मूसाका उपनाम जो खुदासे वात किया करते थे

सीना – तूर, एक खास पहाड

नूहे नवी – पैगम्वर नूह (तूफाने नूह), प्रलयके वाद वचनेवाले एक पैगम्वर। कहते हैं उनकी नाव भी हिन्दुस्तानके आसपास ही आकर ठहरी थी।

सफीना – किश्ती

रफअत – वुलदी, ऊँचाई

वामे फलकका ज़ीना – आकाशके छतकी सीढियाँ

जन्नत – स्वर्ग

फज़ा – वायुमडल

उकता गया हूँ

महफिल – सभा

या रब –हे परमात्मा

लुत्फ – मज़ा

अंजुमन – मजलिस, महफिल

दिल बुझ गया हो – कोई अरमान न रहा हो

शोरिश – शोरोगुल; कोलाहल

गुरेजाँ – भागना

सकूत – शांति

तकरीर भी फिदा हो – वाणी मोहित हो जाय।

ख़ामुशी – शांति

आरज़ू – इच्छा, चाह, वांछा

दामाने कोहमें – पहाडकी तलहटीमें

लज्ज़त – आनन्द

सरोद – गाना, एक प्रकारका तार-वाद्य (वाजा)

चश्मा – झरना

आगोश – गोद

सब्ज़ा – हरियाली

गुल – फूल

चटककर – खिलकर

पैगाम – संदेश

सागर – प्याला

जहाँनुमा – जिससे संसारके दर्शन हो

सफ – पंक्ति, हार

जानिब – तरफ

बूटा – पौधा

दिलफ़रेब – मनमोहक, आकर्षक

कुहसारका नज़ारा – पहाड़का दृश्य

मौज – लहर

जिस दम – जिस वक़्त, जिस घडी

दिया – दीपक

मुअज़्ज़न – अज़ान लगानेवाला, बाँग लगानेवाला

हमनवा – साथ गानेवाला

दैरो-हरम – मंदिर-मस्जिद

एहसाँ – अहसान

रोजन – छेद, सूराख़

सहरनुमा – सुबहको बतानेवाला

शबनम – ओस

वज़ू – नमाज़ पढनेके पूर्व शुद्धिके लिए हाथ-पाँव आदि धोना

दुआ – इबादत

नमसे – गीलेपनसे

उम्मीदका बूटा – आशाका अंकुर

नाला – दु:खका गीत

दिरा – (दरा) घटा

नारी

यह कविता प्रसादजीके महाकाव्य 'कामायनी' के छठे सर्ग 'लज्जा' में ली गई है।

'कामायनी' महाप्रलय द्वारा देवसृष्टिके विनाश और उसके वाद मनु और कामायनीके पुत्र मानवके द्वारा मानव-सृष्टिके प्रारंभकी कथा है। कथात्मक होते हुए भी यह काव्य भावात्मक ही अधिक है।

इस कवितामे कामायनीकी मनोदशाका चित्रण है। वह मनुके चरणोमें आत्म-समर्पण करने जा रही है। इसी समय सखीके रूपमें लज्जा आकर उसे खूब सोच-विचार कर लेनेका उपदेश देती है। श्रद्धा 'मै दुर्वलतामे नारी हूँ' कहकर उसे उत्तर देती है। फिर लज्जा 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' कहकर उसे फिरसे समझाती है।

अवयव — शरीरके अग

सर्वस्व — सव कुछ

विश्वास महातरु छायामे — विश्वास-रूपी महान वृक्षकी छाँहमें (पुरुपके सरक्षणमें)

ममता जगती है मायामें — इस इन्द्रजालके प्रति क्यो मोह उत्पन्न होता है?

निस्सवल — विना किसी सहारेके

मानस — हृदय, मन, (मन रूपी मानसरोवर)

सपनेकी सुघराईमें — सपनोकी सुन्दरतामें

विकल रग भर देती हो — कामायनी अपनी सखी लज्जा से कहती है कि हे सखी तुम नारी जीवनके चित्रमें व्याकुलताका रग भर देती हो।

अस्फुट — अविकसित

मैं जभी . तुल जाती हूँ — मैं जव जव उचित-अनुचित (को तोलनेका) निर्णय करनेका प्रयत्न करती हूँ, तो स्वय तुल जाती हूँ अर्थात् भ्रममे पड जाती हूँ। कविने इन शव्दोमे नारी स्वभावके मनोवैज्ञानिक सत्यको वतलाया है। स्वभावसे ही वह भावुक होती है। उसका हृदय उसकी वुद्धि पर और भावना कर्तव्य पर हावी हो जाती है। इसलिए वह तर्क द्वारा निर्णय करनेमें प्रायः असफल रहती है।

भुज-लता — हाथोकी वेल

नरतरु — पुरुपरूपी वृक्ष

विश्वास . . . तलमें—विश्वास-रूपी (स्पष्ट और स्वच्छ) चाँदीके पहाड़की तलहटीमें
पीयूष-स्रोत—अमृतका झरना
समतल—सपाट मैदान, समान धरातलवाली जगह
संघर्ष—लडाई-झगड़ा, युद्ध आदि
उर अंतरमें—हृदयके अंदर
अंचल—पल्ला, साड़ीका छोर
स्मितरेखा—मुस्कराहटकी रेखासे, हँसी खुशीसे
संधिपत्र—वह पत्र जिसमें मित्रवत व्यवहार करनेकी प्रतिज्ञा की जाती है
आँसूसे भीगे . . . लिखना होगा—हृदयमें चलनेवाले संघर्षको मिटानेके लिए तुम्हे अपने आँसुओंसे भीगे अंचल पर अपने हृदयका सर्वस्व रख देना होगा। और अपनी मुस्कराहटकी रेखासे तुम्हें यह सुलहनामेकी चिट्ठी लिखनी होगी।

विधवा

इष्टदेव—आराध्य देवता
दीपशिखा—दीपकी लौ
तांडव—भयंकर प्रलयंकारी नृत्य
क्रूर काल . . . रेखासी—निर्दय कालके विध्वंसकी यादगार
छुटी—अलग हुई
दलित—मर्दित, रौंदा या कुचला हुआ
षड्ऋतु—छः ऋतुएँ—वसत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर
कुसुमित—पुष्पोंसे सजे
कानन—जंगल
नीरवपद सचार—खामोशीसे भरी चहलकदमी
स्वच्छंद विहार—स्वतत्र रूपसे विचरना, आनन्द मनाना
विंवित—प्रतिविंवित, परछांईके रूपमें चमकता हुआ
जीवनधन—सर्वस्व
वह ध्रुवतारा—ध्रुवतारेकी भाँति अटल वह सौभाग्य चिह्न
मन मधुकर—मनरूपी भ्रमर
रसावेश—आनन्दकी अधिकतासे, भावोंके जोशमें
मलिन पुलिन—धुंधला तट
छिन्न—क्षत-विक्षत, भग्न, टूटे हुए
त्रस्त चितवन—भीत दृष्टि, डरसे भरी निगाह
अस्फुट स्वर—अस्पष्ट स्वर
समीर—पवन

जिसका नही कुछ छोर – जिसका अत न हो, अनत

पल्लव – पत्ता

सर गया – सर झुक गया, प्रतिष्ठा नष्ट हो गई

ये गजरे तारोवाले

गजरा – माला, हार

रजनीवाले – रात्रिरूपी सुन्दर स्त्री

निधियाँ – खजाने

निर्झर – झरना, सोता

हहरकर – मचलकर, काँपकर, आश्चर्यचकित होकर

किंचित – थोडासा

विचलित होना – स्थान या निश्चयसे डिग जाना

होने दो प्रतिबिंबित – तारोके प्रतिबिंबको लहरो द्वारा चूमा जाने दो

निर्झर स्वरमे – झरनेके जैसे मधुर स्वरमें

पश्चात्ताप

इस कवितामें कवि बीते हुए समयके प्रति पश्चात्ताप करता है। बचपन और जवानीके दिन उसने विलासमे बिता डाले, जब मौत सर पर आ पहुँची तब उसे अपनी भूलका भान हुआ।

सरके – खिसक गए, निकल गए

कपोलके उजालेमे – १. गालोकी चमकमें, २. सौदर्योपासनामें

केशोके अँधेरेमें – १. बालोंके अधकारमें, २ रगरेलियोमे

सरके पासमे – (१) जवानीमे गालो पर चमक और बालोमें कालापन रहता है। इस अवस्थामें मानव इतना मदहोश रहता है कि उसे दिन और रातके व्यतीत होनेका पता ही नही चलता, (२) सौंदर्योपासना और रगरेलियोमें ही उसके दिनरात व्यतीत हो गए।

क्षणभगुर विलास – क्षणभरमें नष्ट हो जानेवाला आमोद प्रमोद

काल – मृत्यु, यमराज

कुटिल मद हास – कपटसे भरी धीमी हँसी

आसन गरम होना – ऐसा प्रसिद्ध है कि भक्तकी पीडामे भगवानका सिंहासन गरम हो जाता है।

उसास – प्रश्वास, अदरसे निकलने वाली दु खसे भरी दीर्घ लबी साँस

ग्राम

कोलाहलमय – शोरगुलसे भरा

आख्यान – कहानी

विमल . . . जीवनका – मनुष्यके जीवनका स्वच्छ झरना

विधि – विधाता, ब्रह्मा

विधान – रचना, कृति

मही – पृथ्वी

जगका मूर्तिमान अनुराग – संसारके प्रेमका मूर्त स्वरूप

औरोंके हित – दूसरोंके लिए

ललना – सुन्दर स्त्री

लालित – प्यारसे पाला-पोसा हुआ

भोली ललना पराग – हे ग्राम ! तू भोलीभाली सुन्दर ग्राम-वधुओंसे पाला-पोसा ससाररूपी पुष्पका सुन्दर पराग है।

कृषक – किसान

श्रमजलसे सिंचित – पसीनेकी बूंदोंसे सींचा जानेवाला

आधार – अवलंब, सहारा

समुचित – उचित, ठीक-ठीक

क्रीडा-स्थल – खेलनेका मैदान

जगती – जगत

विपुल – बहुत बड़ा, विशाल

क्षुधासे त्राण – भूखसे रक्षा

प्रेमनिकेतन – प्रेमका मंदिर, मुहब्बतका मकान

भ्रातृभाव – भाईचारा, भाई-भाईके बीच रहनेवाला प्रेमका भाव

क्षमता – शक्ति, योग्यता, सामर्थ्य

अवनी – पृथ्वी

अधिवास – घर, रहनेकी जगह

अविकार – विकाररहित, विना ईर्षा-द्वेष किये

सन्तत – निरंतर, बराबर

आदिक – इत्यादि, वगैरा

उपहार – भेंट

बल – पौरुष-शक्ति और साहस

ज्योतिष्मान – प्रकाशयुक्त

मलिन – उदास, मैला

विश्व-वाटिकाका मृदु फूल – संसार रूपी बगीचेका तू कोमल फूल है।

निपट निराला – बिलकुल अजीब, अनोखा

जगतीतल – ससार

सर्वदा – हमेशा

आराधना

नीरवता – शांति, खामोशी

विलीन – अदृश्य, लुप्त

धर्मधुरीण – धर्मिष्ठ, धर्मके ठेकेदार

मुल्ला – मौलवी

दीर्घ पुकार – लंबी चीख, बांग

स्वर-धार – स्वरकी धारा, सगीतका प्रवाह

उष्मा – गरमी, धूप

श्रमसे क्लात होकर—मेहनतसे थककर
आर्त्तस्वर—दुखसूचक शब्द
शिशिरकी शीत निशा—ठडके मौसमकी ठडी रात
मीजना—मसलना
धान—चावल
करुणापूरित—करुणासे भरा, गमगीन
प्रयाण—कूच, चल देना
विरहानल—विरहकी आग

कुत्ते

आवारा—व्यर्थ भटकनेवाला
बख्शा गया—दिया गया
ज़ौके गदाई—गरीबीका आनद
सरमाया—पूंजी
जहाँ भरकी—ससार भरकी
धुतकार—फटकार
शवको—रातको
राहत—चैन, आराम
गिलाज़त—गन्दगी
नालियाँ—मोरियाँ, गटर
बसेरा—घर, रहनेकी जगह
फ़ाकोसे उकताकर—भूखसे तग आकर
मजलूम—जिस पर जुल्म हुआ है, पीडित
मखलूक—सृष्टिके जीव
सरकशी—उद्दडता
आकाओंकी—मालिकोंकी
अहसासे ज़िल्लत—अपमानका अनुभव
दुम—पूंछ

एकात रोदन

रोदन—रोना
प्रतिध्वनि—गूंज, ध्वनिके उत्तरमें सुनाई देनेवाली ध्वनि, झाँई
कुहूनिशा—अमावस्याकी अँधेरी
नीरवता . कलाप—खामोशी अपनी दर्दभरी आवाज़में रो रही है।
प्रलाप—रोना, चीखना-चिल्लाना, बडबडाना
विचलित मत हो—अपने निश्चयसे न डिगो
अक—गोदी
शून्य—रिक्त, खाली
व्यथित हृदय—दुखी दिल
कृतघ्न—एहसानफरामोश, धोखेबाज़
उद्भ्रात—व्याकुल

एक ही कहानी

स्वार्थके कारण सब दुष्कर्म होते है। लोग भाई भाई कहते है, पर भाईचारेका व्यवहार नहीं करते। भाइयोंमें भी आपसमें नहीं

वनती। महाभारत युगसे लेकर आज तक यही होता आया है। कुछ समयसे यह दुर्योधन (स्वार्थ) सो गया था, पर अव पुनः जाग गया है, जिसके कारण राजा-प्रजामें खलवली मच गई है।

फेंका पाँसा—चौसर खेली

वनकी सैर दिखाई—कौरवोंने पाडवोंको चौसरमें हराकर वनमें भेज दिया था

घड़ियाँ वीते—समय व्यतीत हो

रैन—रात्रि

सदियोंका सोया— शताब्दियोसे सोया हुआ

कुभकरणकी नीद—रावणका भाई कुभकरण सोनेमें लासानी था, वह ऐसी अटूट निंद्रामें सोता था कि कानमें वदूक छोड़ने पर भी नही जागता था।

दुर्योधन जागा—(कौरवोंका प्रमुख) कुकर्मी फिरसे जग गया

मेरे मनकी आशा जाग

मनका मनोरथ मिल जाएगा—मनोकामना पूरी हो जायगी

मनका कमल भी खिल जाएगा—हृदय प्रफुल्लित हो जायगा

मुण्डेर—छज्जा, छतकी दीवारका आगे निकला हुआ हिस्सा

क़िस्मतके हेटे—वदक़िस्मत, कमनसीव

दीपक राग—एक राग जिसके गानेसे दीपक स्वत. जल उठते है

मग़रूर हो

मगरूर—अभिमानी

जज्वयेगैरत—स्वाभिमानका भाव

झुक जाएँ—नम्र बन जाएँ, छोटे बन जाएँ

राहे खुद्दारी—स्वमानकी राह

लचकना—मुडना

हश्रमे — प्रलयके दिन ईश्वरके सामने

खुसरवाना शान—वादशाही ठाटवाट

पुरसिश—आवभगत

पलट आएँगे—लौट आएँगे

अहले दुनिया—दुनियाके लोग

नाज़—गर्व, अभिमान

वशर—इन्सान, मानव

दिलवरी—वहादुरी, उत्साह

गुलामे कमतरी—विनम्र सेवक

ईद मिलनेवाले

ईद—मुसलमानोंका एक त्यौहार जो रोज़ा ख़तम होने पर होता है। इस दिन लोग आपसमें गले मिलते है।

हौलनाक — भयानक
आलाम — दु ख
हमनशी — दोस्त
सुस्त — उदास
आसाइशकी घातोमें — आरामकी खोजमें
तारीक रात — अँधेरी रात
गमका चश्मा — दु:खका स्रोत
झूठी राहतें — झूठी तसल्लियाँ
तपाँ — तपे हुए
पहलू — बाजू; बगल
फीके कहकहे — वह अट्टहास (ज़ोर की हँसी) जिसमें आनद न हो
खूनके आँसू — अत्यधिक पीडासे भरे आँसू
कोन्दा — शोला
रूह — आत्मा
उफक — उषाका अरुण आकाश
सीनए ज़र्रात — कण-कणके हृदयमें
पैहम — सदा, हरदम
इन्सानियत — मानवता
सुस्तरू — - सुस्त
ग़मनाक — दु खसे भरी
मौसीकी — सगीत
मशगूल — लगे हुए, तल्लीन
दर्दे-पैहम — हमेशा होनेवाला दर्द
गल्ताँ — डूबे हुए
दीदये इगयाये आलम — ससारकी दिखाई देनेवाली चीजें
सबाए ईद — ईदकी हवा
जल्वा — दृश्य

इबादत

इबादत — उपासना, पूजा
जन्नत — स्वर्ग
तमन्ना — इच्छा
तिजारत — व्यापार
नारे-दोज़ख — नरककी आग
बुज़दिलाना एक खिदमत है — कायरतामे की गई चाकरी
शुक्रेनेमतमें — ईश्वरको धन्यवाद देनेके लिए
जबी — मस्तक
शरीफाना अताअत — सच्चा हुक्म मानना
हसरत — इच्छा
बेनियाज़े मुद्दआ — स्वार्थमे बेपरवाह
खुदी — अह
दामन — पल्ला
मर्दे बाख़ुदा — दिव्य पुरुप
तहनशी — नीचेको बैठना
गर्के मौजय बहरेफना — नाशवान समुद्रकी लहरोंमें डूबना

ऐ मन काहे तू घबराये

फूट रही है पौ — प्रकाश फैल रहा है, प्रात काल हो रहा है

लौ – दीपशिखा, दीपकी वत्ती
भोर-परी – प्रात.कालीन अप्सरा
झुमके – कानमें पहने जानेवाले गहने (कर्णफूल)
भागे . . साये – रात्रिका अधकार नष्ट हो गया
दहना – भडकना
सर पर ताशे वजते – आसमानमें ताशोकी-सी ध्वनिमें वादल गरजते है।
वादर – वादल
वादेवहारी – मस्त पवन, सुवहकी ठडी हवा
डारी डारी – प्रत्येक डाली पर
जस – जैसे
जूडा – वालोको गूंथनेका एक विशेष प्रकार
कष्टवचन – ऐसे वचन जिनसे कष्ट उत्पन्न हो

सन्देश

तिल तिल जलना – धीरे धीरे नष्ट होना
मधुसचय कर – शहद इकट्ठा करके
नाम . . . होगा – तुम्हारा नाम चमक जायगा, तुम वडे वन जाओगे।